हम परमेश्वर पर विश्वास करते हैं

अध्याय 1

हम परमेश्वर के बारे में क्या जानते हैं

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय..................1
प्रकाशन और रहस्य..................1
ईश्वरीय प्रकाशन..................1
मूलभूत अवधारणा..................2
विभिन्न प्रकार..................4
ईश्वरीय रहस्य..................8
मूलभूत धारणा..................9
भिन्न प्रकार..................12
गुण और कार्य..................15
ईश्वरीय गुण..................15
मूलभूत धारणा..................15
भिन्न प्रकार..................19
ईश्वरीय कार्य..................21
मूलभूत धारणा..................21
भिन्न प्रकार..................24
उपसंहार..................26

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हम परमेश्वर पर विश्वास करते हैं

अध्याय एक

हम परमेश्वर के बारे में क्या जानते हैं

परिचय

“परमेश्वर को जानने” का अर्थ अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग होता है — अर्थात् परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत घनिष्ठता का अनुभव करने से लेकर उसके सामर्थी कार्यों को देखने, उसके बारे में उन तथ्यों को समझने तक जो पवित्र आत्मा ने प्रकट किए हैं। हममें से अधिकांश यह समझते हैं कि परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध रखना और उसे संसार में कार्य करते हुए देखना महत्वपूर्ण है। परंतु दुखद रूप से, हममें से अधिकांश यह नहीं भाँपते कि परमेश्वर के बारे में अधिक से अधिक तथ्यों को जानना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। और यह कोई अजूबा नहीं है। पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञानी अक्सर जिसे “परमेश्वर की धर्मशिक्षा” या “परमेश्वर विज्ञान” कहते हैं, उसका अध्ययन करना इतना जटिल है कि इसे समझने के लिए काफी प्रयास करना पड़ता है। परंतु यह जितना भी कठिन हो, जितना अधिक हम परमेश्वर के बारे में सीखते हैं, उतना ही अधिक हमारा व्यक्तिगत संबंध उसके साथ बढ़ता जाता है। और जितने अधिक तथ्य हम उसके बारे में जान जाते हैं, इस संसार में उसके कार्य के बारे उतनी ही अधिक हमारी जागरूकता भी बढ़ती जाती है। वास्तव में, परमेश्वर के बारे में अधिक से अधिक सीखना हमारे मसीही विश्वास के प्रत्येक पहलू को शक्तिशाली बनाता है।

यह हमारी श्रृंखला *हम परमेश्वर पर विश्वास करते हैं,* का पहला अध्याय है, यह वह श्रृंखला है जिसे हमने परमेश्वर विज्ञान, या स्वयं परमेश्वर के अध्ययन के लिए समर्पित किया है। हमने इस अध्याय का शीर्षक दिया है, “हम परमेश्वर के बारे में क्या जानते हैं।” इस अध्याय में हम यह बताएँगे कि सुसमाचारिक विधिवत धर्मविज्ञानियों ने इस विषय से संबंधित सबसे मूलभूत विषयों को कैसे देखा, कि परमेश्वर कौन है और वह क्या करता है।

हम परमेश्वर के बारे में क्या जानते हैं पर आधारित यह परिचयात्मक अध्याय बुनियादी विषयों के दो जोड़ों पर ध्यान देगा। पहला, हम परमेश्वर के प्रकाशन और रहस्यों, अर्थात् परमेश्वर ने अपने बारे में क्या प्रकट किया है और क्या गुप्त रखा है, का अध्ययन करेंगे। और दूसरा, हम परमेश्वर की विशेषताओं और उसके कार्यों, जो परमेश्वर की धर्मशिक्षा के पारंपरिक अध्ययन के दो मुख्य विषय हैं, की जाँच करेंगे। आइए पहले परमेश्वर के प्रकाशन और रहस्यों को देखें।

प्रकाशन और रहस्य

सरल रूप में बताने के लिए, हम परमेश्वर के प्रकाशन और रहस्य का अध्ययन अलग-अलग करेंगे। हम ईश्वरीय प्रकाशन से आरंभ करेंगे और फिर हम ईश्वरीय रहस्यों की ओर मुड़ेंगे। आइए हम इसके साथ आरंभ करें कि मसीही मनुष्यजाति के समक्ष परमेश्वर के प्रकाशन, या स्व-प्रकटीकरण के विषय में क्या विश्वास करते हैं।

ईश्वरीय प्रकाशन

जब हम परमेश्वर की धर्मशिक्षा का अध्ययन करते हैं तो ईश्वरीय प्रकाशन से बढ़कर किसी और बुनियादी विषय की कल्पना करना कठिन होगा। परमेश्वर ने अपने विषय में क्या प्रकट किया है? उसने

यह कैसे किया है? इन प्रश्नों के हमारे उत्तरों ने परमेश्वर विज्ञान के प्रत्येक पहलू को सुव्यवस्थित कर दिया

हम ईश्वरीय प्रकाशन के विचार का परिचय दो रूपों में देंगे। पहला, हम प्रकाशन की मूलभूत मसीही अवधारणा का परिचय देंगे। और दूसरा, हम प्रकाशन के दो मुख्य प्रकारों को देखेंगे जिन्हें हमें तब ध्यान में रखना चाहिए जब हम परमेश्वर के बारे में सीखते हैं। तो फिर, ईश्वरीय प्रकाशन की मूलभूत अवधारणा क्या है?

मूलभूत अवधारणा

अपने उद्देश्यों के लिए, हम ईश्वरीय प्रकाशन की मूलभूत मसीही अवधारणा को इस प्रकार सारगर्भित कर सकते हैं :

> परमेश्वर का स्व-प्रकटीकरण, सदैव मानवीय संदर्भों में दिया जाता है और मसीह में संपूर्णता के साथ दिया जाता है।

इस तथ्य के साथ आरंभ करते हुए इस अवधारणा के दो पहलुओं पर प्रकाश डालना आवश्यक है कि परमेश्वर ने सदैव स्वयं को मानवीय संदर्भों में प्रकट किया है।

> मेरा मानना है कि बाइबल के परमेश्वर के बारे में सबसे अद्‌भुत बात, जो वास्तव में केवल बाइबल के परमेश्वर के विषय में ही पाई जाती है, यह है कि वह अपनी सभी अवर्णनीय विशेषताओं , या इन असीम विशेषताओं, जैसे सर्वोच्चता और अनंतता और असीमितता को ऐसे रचित प्राणियों के संबंध में बनाए रखता है, जो नश्वर, सीमित और इतिहास में हैं। और हमें बताया गया है कि वह महान 'मैं हूँ' रचित प्राणियों के साथ संबंध स्थापित करने के लिए समय, स्थान और मानवीय इतिहास में प्रवेश करता है और और उनके साथ उनके स्तर पर संबंध स्थापित करता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि वह अपने सर्वज्ञानी, असीमित, अनंत स्वभाव को त्याग देता है, परंतु वह उनके साथ उसी स्तर पर संबंध बनाता है जहाँ वे होते हैं, लगभग वैसे ही जैसे हम एक छोटे बच्चे के साथ करते हैं, और उनसे उसी स्तर पर बात करता है। मैं अपनी रसोई में जाता हूँ और हर तरफ आटा बिखरा हुआ पाता हूँ और कहता हूँ, "प्रिय, क्या आटे के साथ कुछ हुआ है?" इसलिए नहीं कि मैं नहीं जानता कि आटे के साथ क्या कुछ हुआ है, परंतु मैं अपने बच्चों के साथ उसी स्तर पर एक संबंध बना रहा हूँ जहाँ वे हैं। और परमेश्वर अपने अनुग्रह में हमारे लिए यही करता है। परमेश्वर की अद्‌भुत कृपालुता ऐसे तरीके से हमारे साथ संबंध बनाने में मार्गदर्शन करती है कि कई बार ऐसा लगता है कि वह अपनी कुछ असीम अनंत विशेषताओं के साथ समझौता कर रहा हो। परंतु ऐसा बिल्कुल नहीं है। परमेश्वर तो बस हमारे साथ हमारे स्तर पर संबंध बना रहा है क्योंकि वह हमसे उतना अधिक प्रेम करता है।
>
> - डॉ. के. ऐरिक थोनेस

हम सब जानते हैं कि हम परमेश्वर का अध्ययन वैसे नहीं कर सकते जैसे हम प्रतिदिन के जीवन की अन्य बहुत सी बातों का करते हैं। हम उसकी उँचाई और उसके भार को नाप नहीं सकते, या उसे परखनली में डालकर जाँच नहीं सकते। इसके विपरीत, परमेश्वर अनुभव से इतना परे है, हमसे बहुत दूर है, कि वह केवल इस एक वास्तविकता बिना छिपा रहेगा : और वह वास्तविकता यह है कि पवित्र

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

आत्मा ने उसे मानवीय संदर्भों में प्रकट किया है। विधिवत धर्मविज्ञानियों ने अक्सर इसे प्रकाशन के मानवरूपी चरित्र के रूप में संबोधित किया है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने स्वयं को मानवीय रूप में प्रकट किया है, या ऐसे रूपों में प्रकट किया है कि मनुष्य समझ सकें।

पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के कम से कम चार प्रकार के मानवरूपी प्रकाशन दिए हुए हैं। सबसे संक्षिप्त भाव में, पवित्रशास्त्र अक्सर परमेश्वर की विशेषताओं की तुलना मानवीय विशेषताओं के साथ करता है। बाइबल के असँख्य अनुच्छेद परमेश्वर के विषय में ऐसे बात करते हैं जैसे कि उसके आँख, कान, नाक, हाथ, पाँव और पैर हों। परमेश्वर तर्क-वितर्क भी करता है, प्रश्न पूछता है, दूसरे से विचार-विमर्श करता है, भावनाओं को महसूस करता है और चिंतन करता है। वह कार्यवाही करता है और नरम भी पड़ जाता है, जैसे कि आप और मैं करते हैं। परंतु संपूर्ण पवित्रशास्त्र यह स्पष्ट करता है कि इस तरह के मानवरूपी ईश्वरवाद को रूपकों, अर्थात् परमेश्वर और मनुष्यों के बीच की तुलना, के रूप में ही लिया जाना चाहिए। परमेश्वर के पास लोगों के समान भौतिक आँखें या हाथ नहीं है। परंतु फिर भी हम जानते हैं कि वह हर समय देखता है और कार्यों को पूरा करता है।

थोड़े से बड़े भाव में, पवित्रशास्त्र परमेश्वर को मानवीय सामाजिक संरचनाओं के संदर्भों में भी मानवरूपी भाव में प्रस्तुत करता है। उदाहरण के लिए, बाइबल बारंबार परमेश्वर को सृष्टि के सर्वोच्च राजा के रूप में प्रदर्शित करता है। वह स्वर्ग के सिंहासन पर विराजमान है, मंत्रणा करता है, कार्यों का लेखाजोखा लेता है, घोषणाएँ करता है, संदेशवाहकों को भेजता है, और आराधना स्वीकार करता है, वैसे ही जैसे बाइबल के समयों में माववीय सम्राट किया करते थे।

ऐसे ही भावों में, पवित्रशास्त्र परमेश्वर को इस्राएल के राजकीय योद्धा, व्यवस्था के देने वाले, वाचा को स्थापित करने वाले और वाचा को पूरा करने वाले के रूप में दर्शाता है। वह अपने लोगों का राजकीय चरवाहा और राजकीय पति और पिता है। एक बार फिर से, परमेश्वर के विषय में ये प्रकाशन हमें बताते हैं कि कुछ रूपों में परमेश्वर मनुष्यों के जैसा है। वह ऐसे रूपों में राज्य करता है जो उन रूपों के समान हैं जिनमें प्राचीन संसार के मानवीय राजाओं ने राज्य किया था।

और अधिक विस्तृत रूप में, हम कह सकते हैं कि इतिहास में परमेश्वर के दृश्य प्रकटीकरण भी मानवरूपी हैं। बाइबल ऐसे कई समयों का वर्णन करती है जब परमेश्वर दृश्य रूप में इस संसार में प्रकट हुआ - जिसे हम अक्सर "ईशदर्शन" कहते हैं। सबसे नाटकीय ईशदर्शनों ने परमेश्वर को भौतिक धुएँ और आग के साथ, और महिमा के उसके दृश्य स्वर्गीय बादल के दर्शनों के साथ जोड़ा। अब, कुलुस्सियों 1:25 और 1 तीमुथियुस 1:17 जैसे अनुच्छेद हमें बताते हैं कि परमेश्वर स्वयं अदृश्य है। अतः परमेश्वर के ये दृश्य प्रकटीकरण भी इस भाव में मानवरूपी हैं कि ये परमेश्वर को वैसे प्रस्तुत नहीं करते हैं जैसे वह स्वयं को जानता है। इसकी अपेक्षा, वे परमेश्वर को ऐसे रूपों में प्रस्तुत करते हैं कि जिनमें मनुष्य अपनी सिमित क्षमताओं में उसका अनुभव कर सकते हैं।

अंततः, सबसे विस्तृत भाव में, पवित्रशास्त्र परमेश्वर को तब भी मानवीय अर्थ में प्रकट करता है जब वह उसकी अस्पष्ट योग्यताओं को दर्शाता है। बाइबल अक्सर परमेश्वर को न्यायी, पवित्र, सामर्थी, इत्यादि के रूप में संबोधित करता है। परंतु बाइबल के लेखकों ने मानवीय आधार पर परमेश्वर के इन अस्पष्ट विवरणों को स्पष्ट किया, ऐसे रूपों में जिन्हें हम समझ सकते हैं। अतः यह कहना सही होगा किसी न किसी तरह से, संपूर्ण ईश्वरीय प्रकाशन मानवरूपी है। परमेश्वर ने मनुष्यजाति के समक्ष अपने विषय में सच्चाइयों को प्रकट किया है, परंतु सदैव ऐसे रूपों में जो हमारी मानवीय सीमितताओं के अनुसार हों।

यह ध्यान में रखते हुए कि पवित्र आत्मा ने सदैव परमेश्वर को मानवीय संदर्भों में हम पर प्रकट किया है, आइए हम ईश्वरीय प्रकाशन की दूसरी मूल विशेषता को देखें : परमेश्वर ने स्वयं को सबसे संपूर्ण रूप में मसीह में प्रकट किया है।

निश्चित रूप से, मसीही विश्वास में स्वयं मसीह से बढ़कर और कुछ भी अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। केवल वही हमारा उद्धारकर्ता और हमारा प्रभु है। और वह मनुष्यजाति के प्रति परमेश्वर का अपना

सर्वोच्च प्रकाशन है। अब, मसीही के अनुयायी होने के नाते, हम यह मानते हैं कि परमेश्वर ने बाइबल के इतिहास में स्वंय को कई तरह से प्रकट किया है। परंतु कुलुस्सियों 1:15 जैसे अनुच्छेद हमें बताते हैं कि मानवीय संदर्भों में यीशु ही परमेश्वर का अपना परम प्रकटीकरण है। यीशु परमेश्वर का देहधारी अनंत पुत्र है, सिद्ध मानवीय स्वरूप और परमेश्वर का प्रतिनिधि है। और इसी कारण, परमेश्वर के विषय में जिन बातों पर हम विश्वास करते हैं, वे यीशु में परमेश्वर के सर्वोच्च प्रकाशन, अर्थात् उसकी शिक्षाओं, और उसके जीवन, मृत्यु, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और महिमामय पुनरागमन के महत्व अनुसार होनी चाहिए।

ईश्वरीय प्रकाशन की इस मूलभूत अवधारणा को ध्यान में रखते हुए, हमें परमेश्वर की ओर से आने वाले विभिन्न प्रकार के प्रकाशनों पर ध्यान देने के द्वारा परमेश्वर के स्व-प्रकटीकरण को देखना चाहिए।

विभिन्न प्रकार

जैसा कि हमने कहा है, परमेश्वर का सर्वोच्च प्रकाशन यीशु है। परंतु नए नियम के विवरण में, यीश ने यह स्पष्ट किया कि वह परमेश्वर का एकमात्र स्व-प्रकटीकरण है। इसकी अपेक्षा, उसने पुष्टि की है कि परमेश्वर ने स्वयं को विभिन्न तरीकों से प्रकट किया है।

> सबसे पहले, हम परमेश्वर को तब तक नहीं जान सकते हैं जब तक वह स्वयं को हम पर प्रकट नहीं करता, और वह ऐसा कई तरीकों से करता है, सृष्टि और उसके अद्‌भुत कार्यों के द्वारा भी जब हम अपने चारों ओर देखते हैं। वह स्वयं को दूसरे लोगों के साथ हमारे संबंधों में प्रकट करता है जो हमें वे बातें बताते हैं जो उन्होंने परमेश्वर के बारे में सीखी हैं। हम परमेश्वर से इस प्रकाशन को कई स्तरों में प्राप्त करते हैं। निस्संदेह, मसीहियों के लिए, सबसे महत्वपूर्ण यह है कि परमेश्वर ने हमारे समक्ष स्वयं को अपने पवित्र वचन में प्रकट किया है . . . इस कारण, हम हमारे चारों ओर देखते हैं और हम पाते हैं कि परमेश्वर ने हम पर स्वयं को प्रकट किया है, हम जानते हैं कि उसका अस्तित्व है, और फिर वह अपने शिष्यों के द्वारा, और आज तक अपने पवित्र वचन के द्वारा हमें स्वयं के बारे में बताता है।
>
> - डॉ. जैफ्री मूरे

विधिवत धर्मविज्ञान अक्सर परमेश्वर के प्रकाशन के दो प्रकारों को पहचानता है जिन्हें स्वयं यीशु ने स्वीकार किया था। पहले प्रकार को अक्सर सामान्य प्रकाशन या स्वाभाविक प्रकाशन कहा जाता है।

सामान्य प्रकाशन। सरल शब्दों में कहें तो, सामान्य प्रकाशन बाइबल की उस शिक्षा को दर्शाता है जिसमें परमेश्वर ने सृष्टि के हर अनुभव के द्वारा स्वयं को मनुष्यों पर प्रकट किया। पुराने नियम के कई अनुच्छेदों, जैसे भजन 19, के समरूप स्वयं यीशु ने सामान्य प्रकाशन से बारंबार धर्मवैज्ञानिक अर्थों को प्राप्त किया। उसने परमेश्वर के बारे में शिक्षा देने के लिए अक्सर प्रकृति और सामान्य मानवीय गतिविधिओं, जैसे खेती-बाड़ी और मछली पकड़ने के कार्यों का प्रयोग किया। वास्तव में, उसने बार-बार अपने शिष्यों को प्रेरित किया कि वे अपने भीतर और चारों ओर यह पहचानने के लिए देखें कि वे अपने जीवन के अनुभवों से परमेश्वर के बारे में क्या सीख सकते थे।

हम प्रेरितों के काम 14:17 और 17:28 जैसे स्थानों में ऐसी ही समान बातों को देखते हैं। इन पदों में, प्रेरित पौलुस ने मसीह के उदाहरण का अनुसरण किया और सामान्य प्रकाशन को लागू किया। यहाँ उसने अन्यजातियों के लोगों का ध्यान उस ओर लगाया जो वे प्रकृति पर चिंतन करने और यूनानी काव्य के द्वारा परमेश्वर के बारे में जानते थे।

रोमियों 1 और 2 पवित्रशास्त्र में सामान्य प्रकाशन का सबसे व्यापक स्पष्टीकरण करता है। ये अध्याय सकारात्मक और नकारात्मक दोनों दृष्टिकोणों की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं जिन्हें हमें तब ध्यान में रखना चाहिए जब हम परमेश्वर विज्ञान की खोज करते हैं। सकारात्मक रूप से, रोमियों 1 और 2 सिखाते हैं कि हम परमेश्वर की सृष्टि में जीवन के अनुभवों से परमेश्वर के बारे में बहुत सी बातें सीख सकते हैं। सुनिए रोमियों 1:20 में प्रेरित पौलुस ने क्या कहा है :

> उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं। (रोमियों 1:20)

जब हम इन अध्यायों को ध्यान से देखते हैं, तो हम पाते हैं कि "जगत की सृष्टि" प्राकृतिक व्यवस्था से बढ़कर है। पौलुस के मन में भी वही था जो हम मानवीय संस्कृति, स्वयं मनुष्यों और हमारे व्यक्तिगत आंतरिक जीवनों, अर्थात् हमारे नैतिक विवेक, अंतर्ज्ञान, पूर्वाभास आदि से परमेश्वर के बारे में सीखते हैं।

> मेरा विचार है कि सामान्य प्रकाशन वास्तव में महत्वपूर्ण धर्मवैज्ञानिक अवधारणा है। पहला कारण, क्योंकि यह वह बात है जिसका इनकार नहीं किया जा सकता। हम सब इस संसार में रहते हैं; चाहे हम मसीही हों या न हों, हम सब परमेश्वर द्वारा रचे इस संसार में रहते हैं। अब चाहे एक गैर-मसीही विश्वासी यह माने या न माने, वह दूसरी बात है। परंतु जिसे हम "सामान्य प्रकाशन" कहते हैं, वह सृष्टि में हमारे चारों ओर दिखाई देने वाली बातें हैं, हम सृष्टि को देखने के द्वारा ही ऐसी बहुत सी बातों को देख सकते हैं कि परमेश्वर कौन है। हम वास्तविकता के कारण यह देखते हैं कि हमारे पास एक सामर्थ्यशाली परमेश्वर है क्योंकि उसने ग्रहों और सितारों और चंद्रमा की रचना की है। हमारे पास एक ऐसा परमेश्वर है जो सुंदरता को पसंद करता है और जो बातें सुंदर प्रकृति की होती हैं वे उसके लिए महत्व रखती हैं। हम इसे जानवरों, वृक्षों, और सूर्यास्त में देखते हैं। हम एक शेर में परमेश्वर के वैभव को देखते हैं। हम उसके चरित्र को वहीं पाते हैं जहाँ हम देखते हैं। अब यह बहुत ही महत्वपूर्ण हो सकता है, विशेषकर सुसमाचार प्रचार के दृष्टिकोण से, क्योंकि हमें कहीं पर एक आरंभिक बिंदु की आवश्यकता है, और सामान्य प्रकाशन हमें वह आरंभिक बिंदु देता है। हम संसार के बारे में कुछ बातों को जानते हैं जिसमें हम रहते हैं और इसलिए, हमारे चारों ओर देखने के द्वारा उस परमेश्वर के बारे में भी जानते हैं जिसने इस संसार को रचा है।
>
> - रेव्ह. रिक रोडेहिवर

सदियों से, सामान्य प्रकाशन के प्रति इस सकारात्मक दृष्टिकोण ने "प्राकृतिक धर्मविज्ञान" के रूप में परमेश्वर के धर्मशिक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। प्राकृतिक धर्मविज्ञान सामान्य प्रकाशन के माध्यम से परमेश्वर के बारे में जानने का एक निरंतर प्रयास है। मसीह के अनुयायियों ने सदैव यह स्वीकार किया है कि हम प्राकृतिक धर्मविज्ञान के माध्यम से परमेश्वर के बारे में बहुत कुछ सीख सकते हैं। और कुछेक अपवादों के साथ, परमेश्वर की धर्मशिक्षा पर औपचारिक धर्मवैज्ञानिक चिंतनों ने कलीसिया की लगभग प्रत्येक शाखा में प्राकृतिक धर्मविज्ञान को सम्मिलित कर दिया है।

असल में, मध्यकालीन अवधि के दौरान अग्रणी विद्वतावादी धर्मविज्ञानियों ने प्राकृतिक धर्मविज्ञान का अनुसरण करने के लिए वास्तव में एक औपचारिक त्रि-रूपी रणनीति की रचना की। पहला, उन्होंने "करणीय संबंध का तरीका," लैटिन में *वाया कौजालिटाटिस,* के बारे में बात की। इससे उनका

अर्थ था कि हम सृष्टि में उन अच्छी बातों के देखने के द्वारा परमेश्वर के बारे में सत्यों को सीख सकते हैं जिन्हें परमेश्वर ने रचा है या वह उनकी "रचना का कारण बना" है। उदाहरण के लिए, हम देख सकते हैं कि परमेश्वर ने इस संसार में सुंदरता और क्रम-व्यवस्था की रचना। अतः हम कह सकते हैं कि परमेश्वर स्वयं भी सुंदर और व्यवस्थित होगा।

दूसरा, विद्वतावादी धर्मविज्ञानियों ने "निषेध के तरीके," लैटिन में *वाया निगाशनिस,* के बारे में भी बात की। इससे उनका अर्थ था कि हम परमेश्वर को सृष्टि की सीमितताओं और कमियों के विपरीत दर्शाने के द्वारा परमेश्वर के विषय में सत्यों को प्रमाणित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, सृष्टि समय में सीमित है, परंतु परमेश्वर अनंत है। सृष्टि स्थान में सीमित है, परंतु परमेश्वर असीमित है।

और तीसरा, मध्यकालीन विद्वतावादी धर्मविज्ञानियों ने "श्रेष्ठता के तरीके," लैटिन में *वाया एमीनेनटिआए* के बारे में भी बात की। इससे उनका अर्थ था कि हम इस बात पर ध्यान देने के द्वारा सामान्य प्रकाशन से परमेश्वर के विषय में सत्यों को प्रमाणित कर सकते हैं कि कैसे परमेश्वर सदैव उन वस्तुओं से श्रेष्ठ हैं जिसकी उसने रचना की है। उदाहरण के लिए, प्रकृति की शक्ति परमेश्वर के सर्वोच्च सामर्थ्य में विश्वास करने में हमारा मार्गदर्शन करती है। मानवीय बौद्धिक योग्यताएँ परमेश्वर की अतुल्य बुद्धि की ओर हमें अग्रसर करती हैं।

अधिकतर, सुसमाचारिक लोग आजकल ऐसे कठोर तरीकों का अनुसरण नहीं करते हैं, परंतु प्राकृतिक धर्मविज्ञान परमेश्वर विज्ञान में मुख्य भूमिका अदा करना निरंतर जारी रखती है। यीशु ने अपने चेलों को सिखाया कि परमेश्वर ने सृष्टि के प्रति हमारे अनुभव के प्रत्येक पहलू की रचना अपने बारे में बातों को प्रकट करने के लिए की है। और, मसीह के विश्वासयोग्य लोगों के रूप में, हमें सामान्य प्रकाशन के माध्यम से उन सब बातों को खोजना चाहिए जिन्हें हम परमेश्वर के बारे में सीख सकते हैं।

सामान्य प्रकाशन और प्राकृतिक धर्मविज्ञान के प्रति ये सकारात्मक दृष्टिकोण परमेश्वर विज्ञान के किसी भी अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है। परंतु हमें इस पर भी ध्यान देना आवश्यक है कि कैसे रोमियों के पहले दो अध्याय कुछ महत्वपूर्ण नकारात्मक दृष्टिकोण भी प्रस्तुत करते हैं। रोमियों 1:18 में, पौलुस ने तब सामान्य प्रकाशन के प्रति अधिक नकारात्मक दृष्टिकोणों पर बल दिया जब उसने यह लिखा :

> परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं। (रोमियों 1:18)

इस पद में, पौलुस ने स्पष्ट किया कि सामान्य प्रकाशन उसकी दया और उद्धार की अपेक्षा "परमेश्वर का क्रोध" प्रकट करता है। और यह सत्य है क्योंकि अधिकतर पापी लोग सामान्य प्रकाशन के "सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं।" वास्तव में, रोमियों 1:25 के अनुसार,

> [पापियों ने] परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला। (रोमियों 1:15)

स्वयं यीशु ने समय-समय पर दर्शाया कि पापपूर्ण मनुष्य निरन्तर अपने जीवन के अनुभवों से परमेश्वर के विषय में उन बातों को सीखने में असफल हुए जो उन्हें सीखनी चाहिए थीं। जैसे कि यीशु और पौलुस दोनों ने बताया, पापपूर्ण लोगों में सृष्टि के माध्यम से परमेश्वर द्वारा प्रकट बातों के विषय में स्वयं से और दूसरों से झूठ बोलने की प्रवृत्ति होती है।

> मैं इस बारे में बहुत अधिक सचेत रहना चाहूँगा कि हम प्राकृतिक धर्मविज्ञान के लेबल या उसकी श्रेणी से परमेश्वर बारे में क्या सीखते हैं। मैं रोमियों 1:20 जैसे कथनों पर आश्रित होना चाहूँगा, जो कि उसकी वैभवता, उसके सामर्थ्य के बारे में बात करते हैं। मैं सोचता हूँ कि यह वे बातें हैं जिन पर आप उस संदर्भ में आश्रित सकते हैं जो आप सीखना चाहते हैं। परंतु मैं तुरंत ही यह भी कहना चाहूँगा कि

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> उचित दृष्टिकोण को प्राप्त करने के लिए हमें विशेष प्रकाशन की बहुत आवश्यकता है . . . इसलिए, आपको मनुष्य के तर्क-विर्तक को जाँचने के लिए विशेष प्रकाशन की आवश्यकता है, मेरा कहना है कि फिर चाहे यह स्वायत्त हो या स्वतंत्र मानवीय तर्क-विर्तक। क्योंकि रचित क्षेत्र कुछ बातों को उत्पन्न करता है जिन्हें संदेह के रूप में भी पढ़ा और समझा जा सकता है। प्रभु यीशु मसीह की वास्तविकता का विशेष प्रकाशन इसे उचित रूप में पूरा करता है कि परमेश्वर कौन है। हमारे तर्क-विर्तक को उसके अनुसार रखने के लिए उसके वचन के परामर्श की बहुत अधिक आवश्यकता है।
>
> \- डॉ. ब्रूस एल. फ़ील्ड्स

> परमेश्वर की सृष्टि हमें कई बातें सिखाती है . . . सबसे मूलभूत बात यह निस्संदेह हमें यह सिखाती है कि वह सर्वोच्च सृष्टिकर्ता है। परमेश्वर वह है जो सब वस्तुओं को शून्य से उत्पन्न करता है, अतः यह हमें उसकी सामर्थ्य के बारे में भी सिखाती है। रोमियों 1 के अनुसार, यह हमें उसकी धार्मिकता के बारे में सिखाती है। हम रोमियों 1 में पाते हैं कि सब मनुष्य जानते हैं कि परमेश्वर है, कि उसकी आराधना की जानी चाहिए, और सब लोगों के पास परमेश्वर की धार्मिकता और पवित्रता का बोध है। पापी मनुष्यों के रूप में हम उसे दबा देते हैं; हम उसे अनदेखा करने का प्रयास करते हैं। अतः, सृष्टि हमें सिखाती है कि परमेश्वर सृष्टिकर्ता है; वह सामर्थी है और वह धर्मी है। पापी मनुष्यों के रूप में हम उन बातों का इनकार करने और उन्हें दबाने का प्रयास करते हैं। अतः, परमेश्वर के बारे में जो बात सृष्टि नहीं सिखाती, वह यह है कि हमें उसके साथ सही संबंध कैसे बनाएँ। सृष्टि वे बातें सिखाती है जो मैंने यहाँ दर्शाई हैं, परंतु यह हमें परमेश्वर के अनुग्रह और प्रभु यीशु मसीह में दया के विषय में नहीं सिखाती। इसके लिए प्रभु यीशु मसीह में उसके कार्यों पर उससे संबंधित पूरक प्रकाशन का होना आवश्यक है।
>
> \- डॉ. कार्ल आर, ट्रूमैन

सामान्य प्रकाशन के प्रति ये नकारात्मक दृष्टिकोण प्राकृतिक धर्मविज्ञान पर बहुत अधिक निर्भर रहने के विषय में एक कड़ी चेतावनी को उत्पन्न करते हैं। प्राकृतिक धर्मविज्ञान त्रुटिरहित नहीं है क्योंकि पाप ने सृष्टि से प्राप्त हमारे अनुभवों से परमेश्वर के विषय में सीखने की हमारी क्षमता को भ्रष्ट कर दिया है। गंभीर मसीही धर्मविज्ञानियों के सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद भी, प्राकृतिक धर्मविज्ञान ने निरन्तर सामान्य प्रकाशन का गलत अर्थ निकाला है और परमेश्वर के प्रति हमारी अवधारणा में मिथ्या बातों को डाला है।

उदाहरण के लिए, धर्माध्यक्षीय और मध्यकालीन अवधियों के दौरान, अन्यजाति के यूनानी रहस्यवाद ने बहुत से लोगों को इस बात का इनकार करने को प्रेरित किया कि मनुष्य परमेश्वर के बारे में कुछ जान सकता है। अठारहवीं शताब्दी में, प्रकृति की व्यवस्था के प्रति गलत समझ ने कई धर्मविज्ञानियों को प्रबोधन दैववाद, अर्थात् ऐसा विश्वास कि परमेश्वर इस संसार की गतिविधियों में सम्मिलित नहीं है, का समर्थन को प्रेरित किया। हाल ही सदियों में, जीवविज्ञान के विज्ञानीय अध्ययनों ने लोगों को सृष्टिकर्ता के रूप में परमेश्वर के बाइबल के चित्रण का इनकार करने को प्रेरित किया है। प्रत्येक पड़ाव पर, मनुष्य के हृदय की भ्रष्टता ने सामान्य प्रकाशन में परमेश्वर के बारे में प्रकट सत्य को खो देने में धर्मविज्ञानियों को प्रेरित किया है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

निस्संदेह, प्राकृतिक धर्मविज्ञान के प्रति ये नकारात्मक दृष्टिकोण एक मूलभूत प्रश्न की ओर अगुवाई करते हैं : यदि पाप सामान्य प्रकाशन के प्रति हमारी जागरूकता को भ्रष्ट करता है, तो हम परमेश्वर के बारे में सत्य को कैसे जान सकते हैं?

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए, हम ईश्वरीय प्रकाशन के दूसरे मुख्य प्रकार को देखेंगे। सामान्य प्रकाशन के अतिरिक्त, यीशु ने यह भी सिखाया कि परमेश्वर ने हमें विशेष या सटीक प्रकाशन दिया है।

विशेष प्रकाशन। व्यापक रूप में कहें तो, विशेष प्रकाशन अलौकिक माध्यमों के द्वारा परमेश्वर का स्व-प्रकटीकरण है। पवित्र आत्मा ने स्वप्नों, दर्शनों, वाणियों, और उद्धार तथा दंड के बड़े कार्यों के द्वारा प्रकाशन दिया है। परमेश्वर ने स्वयं को प्रेरणा-प्राप्त मानवीय प्रतिनिधियों के द्वारा भी प्रकट किया है, जैसे कि उसके भविष्यद्वक्ता और प्रेरित जो पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरणा-प्राप्त थे। और निस्संदेह, जैसा कि हमने पहले कहा था, परमेश्वर का सबसे बड़ा विशेष प्रकाशन मसीह में था।

परमेश्वर की धर्मशिक्षा के लिए विशेष प्रकाशन के महत्व को बढ़ा चढ़ा कर नहीं बताया जा सकता। यह परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए इतना आवश्यक है कि पाप के इस संसार में आने से पहले ही परमेश्वर ने आदम और हव्वा का विशेष मौखिक प्रकाशन के द्वारा मार्गदर्शन किया। और निस्संदेह, विशेष प्रकाशन पाप में पतन के बाद भी महत्वपूर्ण रहा है। यह न केवल सामान्य प्रकाशन को समझने के हमारे प्रयासों का मार्गदर्शन करता है, बल्कि यह अनंत उद्धार के मार्ग को भी प्रकट करता है।

यह कितना भी अद्‌भुत क्यों न हो कि परमेश्वर ने हमें अलौकिक प्रकाशन प्रदान किया है - संसार में पाप के आने से पहले और बाद में भी - परंतु जिसे हम सामान्य रूप से "परमेश्वर की ओर से विशेष प्रकाशन" कहते हैं वह हजारों वर्षों पहले घटित हुआ था। अतः हम आज विशेष प्रकाशन के माध्यम से परमेश्वर के बारे में कैसे सीखते हैं?

एक बार फिर से, हमें उस ओर मुड़ना चाहिए जो परमेश्वर के सर्वोच्च प्रकाशन, अर्थात् यीशु ने सिखाया था। संक्षेप में, मसीह ने अपने अनुयायियों को सिखाया कि वे स्वयं को पवित्रशास्त्र में दिए हुए परमेश्वर के विशेष प्रकाशन के प्रति समर्पित करें। मरकुस 12:28-34 जैसे अनुच्छेद स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि यीशु ने अपने समय के अन्य रब्बियों के समान परमेश्वर के विशेष लिखित प्रकाशन के रूप में पुराने नियम की पुष्टि की।

और हम जानते हैं कि नया नियम भी परमेश्वर का प्रेरणा-प्राप्त प्रकाशन है। यूहन्ना 16:12-13 और इफिसियों 2:20 जैसे स्थानों में हम सीखते हैं कि यीशु के स्वर्गारोहण के बाद, उसने पवित्र आत्मा को पहली सदी के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं को प्रशिक्षित करने के लिए भेजा कि वे उसकी कलीसिया के समक्ष परमेश्वर को प्रकट करें। नया नियम पहली सदी के इन प्रैरितिक और भविष्यद्वाणीय विशेष प्रकाशनों का हमारा प्रतिनिधि संकलन है। इसी कारण, सुसमाचारिक मसीही बल देते हैं कि हम इतिहास में सामान्य प्रकाशन और विशेष प्रकाशन दोनों में परमेश्वर के प्रकटीकरण को समझने के लिए पवित्रशास्त्र पर निर्भर हो सकते हैं।

परमेश्वर के प्रकाशनों और रहस्यों के विषय में हमारे अध्ययन में, हमने परमेश्वर के विषय में हमारे संपूर्ण ज्ञान के स्रोत के रूप में ईश्वरीय प्रकाशन की खोज की है। अब, आइए इस पहलू के दूसरे हिस्से की ओर मुड़ें। ईश्वरीय रहस्यों, अर्थात् परमेश्वर के बारे में वे बहुत सी बातें जो छिपी रहती हैं, को परमेश्वर विज्ञान के हमारे अध्ययन को किस प्रकार प्रभावित करना चाहिए?

ईश्वरीय रहस्य

एक बात जिसे हमें समझना है, और जो समझने के लिए आसान नहीं है, वह है कि वास्तव में परमेश्वर कौन है। वह ज्ञानातीत है; वह सृष्टि से परे है। जो कुछ हम यहाँ इस संसार में अनुभव करते हैं, उसने रचा है, इसलिए हम वास्तव में उसे तब

> तक नहीं जान सकते, जब तक वह स्वयं को प्रकट नहीं करता, जब तक वह किसी तरह से इस सृष्टि में प्रवेश नहीं करता। वह हमसे बात करता है; वह हम पर स्वयं को प्रकट करता है, जो उसने पूर्ण रूप से अपने पुत्र यीशु में किया है। परंतु उससे वह हमारे लिए रहस्यमयी बन जाता है। और सच्चाई यह है, कि वही एकमात्र तरीका है जिसमें हम परमेश्वर के राज्य को, उसके शासन को और उसके अधिकार को जान सकते हैं - क्योंकि वह हमें यहाँ रहने की अनुमति देता है, और वह एक अदृश्य परमेश्वर है - इसलिए उसके राज्य को जानने का केवल एक तरीका यही है कि वह उसे हम पर प्रकट कर दे।
>
> - डॉ. रिक बॉयड

जैसा कि हम देख चुके हैं, परमेश्वर ने स्वंय और मनुष्यजाति के बीच की एक बहुत बड़ी दूरी पर विजय प्राप्त कर ली है। उसने अपने सामान्य और विशेष प्रकाशन के द्वारा हमारे लिए यह संभव बनाया कि हम उसके विषय में जान सकें। परंतु साथ ही, परमेश्वर के बारे में हमारा ज्ञान ईश्वरीय रहस्यों के द्वारा बहुत अधिक प्रभावित होता है। ऐसी बहुत सी बातें हैं जिन्हें परमेश्वर ने अपने बारे में प्रकट नहीं किया है।

ईश्वरीय रहस्यों को समझना परमेश्वर विज्ञान के लिए इतना महत्वपूर्ण है कि यह इसे दो चरणों में देखने में हमारी सहायता करेगा। हम पहले ईश्वरीय रहस्यों की मूलभूत धारणा को स्पष्ट करेंगे। तब, हम रहस्यों के उन प्रकारों को स्पर्श करेंगे जिनका हम सामना करते हैं जब हम परमेश्वर की धर्मशिक्षा का अध्ययन करते हैं। ईश्वरीय रहस्यों की मूलभूत धारणा क्या है?

मूलभूत धारणा

शब्द “रहस्य” का प्रयोग पवित्रशास्त्र में विभिन्न तरीकों से किया जाता है, परंतु हमारे उद्देश्यों के लिए हम कह सकते हैं कि ईश्वरीय रहस्य :

> परमेश्वर के विषय में ऐसे असँख्य, अप्रकाशित सत्य हैं जो परमेश्वर के प्रति हमारी समझ को सीमित करते हैं।

हम इस परिभाषा के दो पहलुओं को उजागर करेंगे। पहला पहलू यह तथ्य है कि ईश्वरीय रहस्य “परमेश्वर के विषय में असँख्य, अप्रकाशित सत्य हैं।” रोमियों 11:33 में प्रेरित पौलुस ने संकेत दिया कि हमें सदैव ईश्वरीय रहस्यों के प्रति सचेत रहना चाहिए। उसने लिखा :

> आहा, परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर हैं!
>
> उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं! (रोमियों 11:33)

इस पद तक के अध्यायों में पौलुस ने सामान्य और विशेष प्रकाशन के द्वारा परमेश्वर के बारे में कई मजबूत धारणाओं को दर्शाया। परंतु इस अनुच्छेद में पौलुस ने परमेश्वर के ज्ञान और बुद्धि की “गंभीरता” की ओर संकेत किया। और उसने स्वीकार किया कि परमेश्वर के विचार “अथाह” हैं और “उसके मार्ग अगम” हैं। यद्यपि पौलुस ने ईश्वरीय प्रकाशन के द्वारा परमेश्वर के बारे में बहुत कुछ समझा था, फिर भी उसने असँख्य रहस्यों, अर्थात् ऐसी बातों का सामना किया, जिन्हें परमेश्वर के आत्मा ने प्रकट नहीं किया था।

> परमेश्वर रहस्यमयी है क्योंकि वह कैसी भी समझ और ज्ञान से परे है जो हमारे पास हो। वह समय समय पर हमसे परामर्श किए बिना कार्य करता है। वह सदैव

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> हमसे परामर्श लिए बिना ही कार्य करता है, परंतु कई बार उसके कार्य करने के तरीके को समझना हमारे लिए कठिन होता है। वह इस भाव में भी समझ से परे है कि कोई भी परमेश्वर के ज्ञान को पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं कर सकता। वहाँ रहस्य का होना अवश्य है क्योंकि वह परमेश्वर है और कोई रचित प्राणी नहीं है . . . परमेश्वर के रहस्यमयी होने के बारे में ऐसा कुछ नहीं है कि जो हमारे लिए किसी रूप में कोई समस्या हो। परमेश्वर के रहस्य का अर्थ यह नहीं है कि उस तक पहुँचा नहीं जा सकता। इसका अर्थ यह नहीं है कि वह हमसे प्रेम नहीं करता और कि हम उसके प्रेम को महसूस नहीं कर सकते हैं। इसका अर्थ इनमें से कोई भी बात नहीं है। वास्तव में, यदि वह रहस्यमयी न होता, तो हम सुरक्षित रूप से कह सकते थे कि वह परमेश्वर नहीं है; हमें ऐसा परमेश्वर क्यों चाहिए जो रहस्यमयी न हो . . . हम उसे जानते हैं, व्यापक रूप से नहीं, परंतु हम उसे सच्चे रूप से जानते हैं। हम उसे समझते नहीं, परंतु निश्चित रूप से हम उसे कहने के लिए पर्याप्त रूप से जानते हैं कि हम किसी अस्पष्ट दार्शनिक सिद्धांत को नहीं बल्कि परमेश्वर को जानते हैं।
>
> - डॉ. विलियम ऐडगार

प्रिंसटन थियोलोजिकल सेमीनरी के विधिवत धर्मविज्ञान के प्रोफेसर चार्ल्स होज़, जिनका जीवनकाल 1797-1878 तक था, ने महत्वपूर्ण रूप में ईश्वरीय रहस्यों को सारगर्भित किया। अपने *विधिवत धर्मविज्ञान* के पहले संस्करण के भाग 1 के अध्याय 4 में उसने यह लिखा :

> परमेश्वर में उसके विषय में हमारे विचारों से बढ़कर बहुत कुछ है; और उसके विषय में हम जो कुछ जानते हैं, वह हम अपूर्ण रूप से जानते हैं।

होज़ ने यहाँ दो महत्वपूर्ण अवलोकनों को दर्शाया है। पहले, उसने बल दिया कि परमेश्वर के बारे में जो सत्य है वह “हमारे विचारों से बढ़कर बहुत कुछ है।” यहाँ पर केवल थोड़े से रहस्य नहीं हैं, न ही बहुत से रहस्य हैं। इसकी अपेक्षा, क्योंकि परमेश्वर स्वयं असीम है, इसलिए वहाँ हमारी कल्पना से बढ़कर बहुत से रहस्य हैं। होज़ ने यह भी स्पष्ट किया कि ईश्वरीय रहस्य हमारी समझ को इतना भर देते हैं कि “[परमेश्वर के] विषय में हम जो कुछ जानते हैं, वह हम अपूर्ण रूप से जानते हैं।” दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के बारे में ऐसी एक भी बात नहीं है जिसे हम पूर्ण रीति से समझते हैं।

> कई बार जब हम किसी को यह कहते हुए सुनते हैं कि परमेश्वर समझ से परे है, तो हम इस पर एक तरह से नकारात्मक प्रतिक्रिया देते हैं - क्या मैं उसे नहीं जान सकता? क्या मैं उसके बारे में जानकारी प्राप्त नहीं कर सकता? और निस्संदेह, बाइबल परमेश्वर का स्व-प्रकाशन है। उसने स्वयं को प्रकट किया है ताकि हम उसे व्यक्तिगत रूप से जान सकें और उसके बारे में कुछ बातों को जान सकें। परंतु यदि आप रूककर उसके बारे में सोचें, कि यदि परमेश्वर सच में असीमित परमेश्वर है, तो मेरा छोटा सा दिमाग, और यहाँ तक कि इस संसार का सर्वोत्तम धर्मवैज्ञानिक दिमाग भी उसे उसकी पूर्णता में समझ नहीं पाएगा। अपनी परिभाषा के अनुसार, यदि मैं उसे समझ सकूँ, तो मैं उसके जितना ही महान हो जाऊँगा। और इसलिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण भाग है . . . हमारा परमेश्वर कोई छोटा परमेश्वर नहीं है। वह इतना छोटा नहीं है कि मैं अपने दिमाग या किसी पुस्तक में उसकी संपूर्ण समझ को प्राप्त कर लूँ। हम आभारी हैं कि उसने स्वयं को पर्याप्त रूप

> से प्रकट किया है और यह कि उसने हमारे उद्धार का प्रबंध किया है ताकि हम उसके बारे में कुछ समझ को प्राप्त कर सकें, और उसके साथ संगति रख सकें, उसके साथ सही संगति में रह सकें, और उसके बारे में सही विचार रख सकें, चाहे वह व्यापक रूप से न हो। ..परंतु उसे जाना जा सकता है क्योंकि उसने स्वयं को प्राकशित किया है, परंतु वह समझ से परे हैं, और उसकी पूर्णता परमेश्वर के बारे में हमारी समझ, और उसके लिए हमारी आरधना और उसके प्रति हमारी आज्ञाकारिता के लिए बहुत अधिक, बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण है।
>
> - डॉ. गारेथ कोकरिल

यह पहचानने के अतिरिक्त कि ईश्वरीय रहस्य असँख्य हैं, हमें सदैव ईश्वरीय रहस्यों के दूसरे महत्वपूर्ण पहलू पर भी ध्यान देना चाहिए। ईश्वरीय रहस्य हमारी समझ को बहुत सीमित कर देते हैं जब हम परमेश्वर विज्ञान का अध्ययन करते हैं।

ऐसे कई विभिन्न तरीके हैं जिनमें ईश्वरीय रहस्य परमेश्वर के बारे में हमारे ज्ञान को सीमित कर देते हैं, परंतु इस अध्याय के लिए हम केवल दो तरीकों पर ध्यान देंगे। एक ओर, हमारे पास परमेश्वर के बारे में बहुत ही सीमित जानकारी है। यद्यपि परमेश्वर ने स्पष्ट कर दिया है कि उद्धार और मसीह में जीवन के लिए आवश्यक क्या है, वास्तव में, हममें से कोई भी परमेश्वर के बारे में अधिक कुछ नहीं समझता। पहला कुरिन्थियों 13:12 हमें बताता है कि हमें परमेश्वर का सत्य केवल “धुँधला” दिखाई देता है, जैसे कि हम “एक दर्पण में” देख रहे हों।

इसलिए, परमेश्वर की धर्मशिक्षा के विचार-विमर्श में असँख्य प्रश्न उठ खड़े होते हैं जिनका ऐसे ही पूरी तरह से उत्तर नहीं दिया जा सकता। उदारण के लिए, परमेश्वर बुराई को क्यों अनुमति देता है? वर्तमान घटनाओं में हम परमेश्वर के उद्देश्यों को कैसे समझ सकते हैं? बहुत से धर्मविज्ञानी, विशेषकर वे जो संदेहवादियों से घिरे हुए हैं, ऐसी कल्पनाओं में रहते हैं क्योंकि वे यह स्वीकार नहीं कर सकते कि हमारे पास ऐसे प्रश्नों के उत्तर नहीं हैं। परंतु ईश्वरीय रहस्य अक्सर मसीह के विश्वासयोग्य अनुयायियों को यह स्वीकार करने में अगुवाई देते हैं, “मुझे नहीं पता।” जब बात परमेश्वर की धर्मशिक्षा की आती है, तब यदि परमेश्वर ने इसे प्रकट नहीं किया है, तो हम इसे जान नहीं सकते। यह इतनी सरल बात है।

मसीह के विश्वासयोग्य अनुयायी होने के नाते, हमें इस सच्चाई से कभी भागना नहीं चाहिए कि हमारे पास परमेश्वर के बारे में सीमित जानकारी है। वास्तव में, पल दर पल इस तरह की सीमितता को स्मरण करना एक आशीष है। ईश्वरीय रहस्य हमें परमेश्वर पर भरोसा रखने को विवश करते हैं। हमें परमेश्वर के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए अपनी सीमित योग्यताओं पर विश्वास रखने की अपेक्षा पवित्र आत्मा की सेवकाई के द्वारा पिता और मसीह पर निर्भर होना चाहिए।

दूसरी ओर, ईश्वरीय रहस्यों का अर्थ यह भी है कि मनुष्य केवल परमेश्वर के प्रकाशनों के सीमित स्पष्टीकरण ही प्रस्तुत कर सकते हैं। हम इस बात पर बल देने में सही हैं कि सत्य के परमेश्वर का प्रकाशन स्वयं में विरोधाभासी नहीं है। और हम परमेश्वर के प्रकाशनों के बीच बहुत से तार्किक संबंधों को देख सकते हैं। परंतु चाहे हम स्वीकार करें या न करें, ईश्वरीय रहस्य न केवल इस बात को सीमित करते हैं कि हमारे पास परमेश्वर के बारे में कितनी जानकारी है। साथ ही वे परमेश्वर ने जो स्वयं के बारे में प्रकट किया है उसमें से अधिकांश बातों की तार्किक संबद्धता को स्पष्ट करने की हमारी योग्यता को भी सीमित कर देते हैं।

उदाहरण के लिए, हम त्रिएकता, अर्थात् परमेश्वर एक है और उसके तीन व्यक्तित्व हैं, का संपूर्ण रूप से तार्किक स्पष्टीकरण नहीं दे सकते। हम इस वास्तविकता के प्रत्येक पहलू को तार्किक रूप से स्पष्ट नहीं कर सकते कि यीशु पूर्ण रूप से परमेश्वर और मनुष्य दोनों है। हम पूरी तरह से यह स्पष्ट नहीं

कर सकते कि परमेश्वर मनुष्यों के क्रियाकलापों पर संपूर्ण प्रभुत्व रखने के बाद भी हमें हमारे कार्यों के लिए कैसे जिम्मेदार ठहराता है। सर्वोत्तम मसीही विचारकों ने इन और इन जैसे अन्य प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास कियाहै। परंतु वे संपूर्ण और तार्किक स्पष्टीकरणों को प्रदान करने के निकट आने में भी असफल रहे हैं।

अंततः, परमेश्वर ने स्वयं के बारे में जो कुछ प्रकट किया है, उसकी तार्किक संबद्धता को स्पष्ट करने का प्रयास करना महत्वपूर्ण हो सकता है। परंतु हम इस तरह से निर्धारित नहीं करते हैं कि क्या सत्य है और क्या झूठ। किसी भी धर्मवैज्ञानिक दावे का सत्य केवल इस बात पर निर्भर करता है कि क्या परमेश्वर ने इसे सामान्य या विशेष प्रकाशन में प्रकट किया है या नहीं।

> जब धर्मविज्ञानी कहते हैं कि परमेश्वर समझ से परे है, तो उनके कहने का अर्थ यह होता है कि हम, जो नश्वर प्राणी हैं, उसके संपूर्ण सार और अस्तित्व को समझ और बूझ नहीं सकते। परमेश्वर के असीमित होने के कारण यह संभावना बहुत ही कम है कि हम उसे उसे उसकी पूर्णता में समझ और जान सकें। मैं उसे स्मरण करता हूँ जो पौलुस रोमियों 11:33-34 में कहता है, जब वह परमेश्वर के अथाह ज्ञान और बुद्धि के बारे में बात करता है। परंतु फिर भी, क्योंकि उसने हमें पर्याप्त स्व-प्रकटीकरण प्रदान किया है, इसलिए यह विश्वास में आने हेतु हमारे लिए पर्याप्त है।
>
> - रेव्ह. लैरी कोकरेल

ईश्वरीय रहस्यों के महत्व को और अधिक रूप से समझने के लिए, हमने मूलभूत धारणा की खोज की है। अब, ईश्वरीय रहस्यों के उन विभिन्न प्रकारों पर ध्यान देना सहायक होगा जो उस समय क्रियान्वित होते हैं जब हम परमेश्वर की धर्मशिक्षा का अध्ययन करते हैं।

भिन्न प्रकार

हम रहस्यों के दो विभिन्न प्रकारों के बीच अन्तर कर सकते हैं। पहले प्रकार को हम "अस्थाई रहस्य" कहेंगे। आइए देखें कि ऐसा कहने से हमारा क्या अर्थ है।

अस्थाई। अस्थाई रहस्य परमेश्वर के बारे में ऐसे सत्य हैं, जो एक निश्चित अवधि तक मनुष्य से छिपे हुए हैं, परंतु फिर वे इतिहास में बाद में किसी समय प्रकट किए जाते हैं। परमेश्वर सामान्य प्रकाशन के द्वारा अक्सर उसे प्रकट करता है जो एक समय में रहस्यमयी था। वह भौतिक संसार, मानवीय संस्कृति, अन्य लोगों, या यहाँ तक कि हमारे भीतर आए परिवर्तनों का प्रयोग अस्थाई रहस्यों को प्रकट करने के लिए करता है।

विशेष प्रकाशन के साथ भी कुछ ऐसा ही होता है। पवित्रशास्त्र का ध्यान से किया हुआ अध्ययन दर्शाता है कि परमेश्वर के बाद के प्रकाशनों ने उसके पहले के प्रकाशनों का कभी विरोधाभास नहीं किया है। परंतु यह भी स्पष्ट है कि परमेश्वर ने समय के साथ-साथ अपने बारे में और अधिक प्रकट किया है। विशेष प्रकाशन का प्रकटीकरण बाइबल के इतिहास की प्रत्येक अवधि के दौरान हुआ है। निस्संदेह, ईश्वरीय रहस्यों का सबसे नाटकीय प्रकटीकरण मसीह के विशेष प्रकाशन में हुआ। पौलुस के मन में यही बात थी जब उसने इफिसियों 1:9; 3:3 और 6:19 को लिखा। इन पदों में, पौलुस ने मसीह में परमेश्वर के अनंत उद्देश्य के रहस्य को दर्शाया। उसने स्पष्ट किया कि यह रहस्य नए नियम के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के समय तक छिपाए रखा गया था।

इसी कारण, जब कभी हम परमेश्वर के बारे में सीखने का प्रयास करते हैं, तो हमें पुराने नियम में पाए जाने वाले अस्थाई रहस्योंको स्पष्ट करने के लिए सदैव नए नियम के विशेष प्रकाशन की खोज करनी चाहिए।

> कई बार हम शब्द “रहस्यमय” का प्रयोग परमेश्वर के बारे में बात करने के लिए करते हैं क्योंकि हम समझ नहीं पाते हैं कि वह वास्तव में क्या कर रहा है। दूसरी ओर, नया नियम शब्द “रहस्यमय” का प्रयोग सामान्य रूप में करता है, जो कि यूनानी शब्द *मिस्टीरियोन* से आता है - यह वास्तव में समान शब्द है - इसका अर्थ है कि परमेश्वर द्वारा उद्धार की अनुग्रहकारी योजना का प्रकटीकरण ऐसी बात है जिसे हम अपने आप से कभी सोच ही नहीं पाते। अर्थात्, यह इस भाव में रहस्य है कि हम इसे कभी भी समझ नहीं पाते यदि परमेश्वर ने इसे हम पर प्रकट न किया होता। और इसलिए, परमेश्वर अपने विशेष प्रकाशन में अपनी योजना को हम पर प्रकट करता है। और यही कारण है कि आप शब्द *मिस्टीरियोन* का प्रयोग इफिसियों और 1 कुरिन्थियों में होता हुआ देखते हैं। यह ऐसा है कि परमेश्वर धीरे धीरे . . . अपने प्रकाशन को प्रकट कर रहा है और हमें दिखा रहा है कि कैसे उद्धार यहूदियों और अन्यजातियों दोनों के लिए है, और यह किसी भी व्यक्ति के लिए है जो यीशु मसीह को अपने मसीह के रूप में स्वीकार करेगा।
>
> - डॉ. सैमूएल लामेरसन

परंतु, नए नियम के विश्वासी होने के बावजूद भी, हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि परमेश्वर ने अभी तक प्रत्येक अस्थाई रहस्य को प्रकट नहीं किया है। 1 कुरिन्थियों 13:12 में पौलुस इसे इस तरह से लिखता है :

> इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है, परंतु उस समय ऐसी पूरी रीति से पहिचानूँगा। (1 कुरिन्थियों 13:12)

जब मसीह महिमा में वापस आएगा केवल तभी वह प्रत्येक अस्थाई रहस्य को प्रकट कर देगा। और हम परमेश्वर और उसके मार्गों को आज की अपेक्षा कहीं अधिक पूरी तरह से समझ पाएँगे।

जैसा कि हम देख चुके हैं, जब हम परमेश्वर की धर्मशिक्षा का अध्ययन करते हैं तो हम कई अस्थाई रहस्यों का सामना करते हैं। परंतु बाइबल इसे स्पष्ट कर देती है कि जब हम परमेश्वर विज्ञान का अध्ययन करते हैं, तो हमें स्थाई रहस्यों को भी देखना होता है।

स्थाई। स्थाई रहस्य परमेश्वर के बारे में ऐसे सत्य हैं जिन्हें मनुष्य कभी समझ नहीं पाएगा क्योंकि ये सत्य हमारी समझ से परे हैं। पारंपरिक धर्मविज्ञान में, इस वास्तविकता को परमेश्वर के विषय में अबोधगम्यता के रूप में कहा जाता है। हम परमेश्वर के बारे में कुछ बातों को समझ सकते हैं जब वह उन्हें मानवीय रुपों में प्रकट करता है, परंतु हम परमेश्वर के बारे में किसी भी बात को पूरी तरह से कभी नहीं समझ सकेंगे। हम इस विचार को यशायाह 55:8-9 में स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त पाते हैं, जहाँ भविष्यद्वक्ता यशायाह यह लिखा है :

> क्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है। क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है। (यशायाह 55:8-9)

इन पदों में, यशायाह ने इस्राएल को परमेश्वर के विषय में अबोधगम्यता के कारण उत्पन्न परमेश्वर के स्थाई रहस्यों को स्मरण दिलाया।

> जब पवित्रशास्त्र परमेश्वर को रहस्यमयी के रूप में दर्शाता है, तो हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम शब्द "रहस्य" को गलत रूप में न समझ लें। जब मैं इस संसार की वस्तुओं के रहस्यमयी होने के बारे में सोचता हूँ तो मुझे लगता है कि उनके कुछ छिपे हुए रहस्य हैं जो मुझे किसी समय पर चकित कर देंगे। ऐसी बात इस विषय में नहीं है। "रहस्यमयी" से हमारा अर्थ यह है कि परमेश्वर समझ से परे है। हमारा अर्थ है कि उसके पास ऐसा जीवन है जो हमारी कल्पना से परे है। इसका अर्थ यह है कि उसके बारे में ऐसा कुछ है जिसे हम पूरी रीति से समझ नहीं सकते। और मैं भी उसे समझ नहीं सकता। इसका अर्थ है कि यह मेरे रचित जीवन से परे की बात है। वह मेरी सोच से वह बहुत बड़ा है। इसके लिए जिस तकनीकी धर्मवैज्ञानिक शब्द का हम प्रयोग करते हैं वह है, "अनुभवातीत"। परमेश्वर अनुभवातीत है। वह हमारे सोच-विचार की सीमा से परे है। और इसीलिए वह आराधना के योग्य है। इसीलिए वह महान है। इसीलिए वह ऐसा है जिसकी हम प्रशंसा करते हैं।
>
> -डॉ. गैरी एम. बर्ज

> परमेश्वर में रहस्य आंशिक रूप से उसकी इस प्रकृति के कारण है कि वह कौन है, और उसके असीमित बनाम हमारे सीमित होने, हमारी सीमितता तथा उसकी असीमित सामर्थ्य और समझ के कारण है। परंतु साथ ही यह विशेष रूप से सृष्टि में उसके उद्देश्यों और योजनाओं से भी संबंधित है। परमेश्वर क्यों इसी तरीके से कार्य करता और उस तरीके से कार्य नहीं करता है? और मैं सोचता हूँ कि बहुत बार अंहकारी मनुष्यों के रूप में हम यह सोचते हैं कि हम परमेश्वर से बेहतर कार्यों को करना जानते हैं। परंतु परमेश्वर के रहस्य में . . . उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण 29:29 में यह इसके बारे में पवित्रशास्त्र में बात करता है, गुप्त बातें परमेश्वर की ही हैं, परंतु जो बातें उसने प्रकट की हैं उनमें हम आनन्द और उत्सव मना सकते हैं, और वहाँ एक ऐसा भाव है जिसमें हम स्वीकार कर सकते हैं कि परमेश्वर ने हमें सब कुछ नहीं बताया है, उसने अपने बारे में हमें सब कुछ नहीं बताया है - वह कैसे बता सकता है? और हम उसे कैसे समझ सकते हैं? परंतु साथ ही उसने हमें वह सब भी नहीं बताया है कि वह अपने उद्देश्यों और योजनाओं को कैसे पूरा कर रहा है। और पुराने नियम के अय्यूब से बेहतर इसे कोई नहीं जानता जो इस विषय में प्रश्नों का उत्तर चाहता था कि परमेश्वर ने इन बातों की अनुमति क्यों दी, और परमेश्वर ने उसे वह उत्तर नहीं दिया जो वह चाहता था। परमेश्वर ने उसे यह उत्तर दिया, "मैं जानता हूँ कि मैं क्या कर रहा हूँ, और एक भाव में मेरी योजना में एक रहस्य है जिसे केवल मैं ही पूरी तरह से स्पष्ट कर सकता हूँ, और अंततः तू समय के अंत में देखेगा जब सब कुछ अचानक से और पूरी तरह से अर्थपूर्ण होगा।"
>
> -रेव्ह. डॉ. लुईस विंकलर

परमेश्वर के बारे में हम क्या जानते हैं पर आधारित इस श्रृंखला का जब हम आरंभ करते हैं, तो हमें सदैव यह याद रखना चाहिए कि यद्यपि परमेश्वर ने स्वयं को सामान्य और विशेष दोनों प्रकार के प्रकाशन में प्रकट किया है, फिर भी उसने हमसे स्थाई और अस्थाई दोनों प्रकार के रहस्यों को छिपाए रखा है। हम इस वास्तविकता से ऐसी ही बच नहीं सकते कि हम केवल रचित प्राणी ही हैं जिनकी परमेश्वर के विषय में समझ सदैव बहुत ही सीमित है।

परमेश्वर के बारे में हम क्या जानते हैं पर आधारित इस अध्याय में अब तक हमने ऐसे कुछ तरीकों को देखा है जिनमें ईश्वरीय प्रकाशन और रहस्य परमेश्वर विज्ञान के अध्ययन को आकार देते हैं। अब, हम अपने दूसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं : परमेश्वर की विशेषताएँ और उसके कार्य। ये विषय उन दो प्राथमिक तरीकों को प्रस्तुत करते हैं जिनके द्वारा पारंपरिक धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर के बारे में हमारे ज्ञान को सारगर्भित किया है।

गुण और कार्य

परमेश्वर के गुण और कार्यों के अतिरिक्त, विधिवत धर्मविज्ञानियों ने अक्सर परमेश्वर विज्ञान में त्रिएकता के धर्मशिक्षा के ऊपर भी बहुत अधिक ध्यान केन्द्रित किया है। हमने पवित्र त्रिएकता के ऊपर कुझ सीमा तक प्रेरितों का विश्वासवचन के ऊपर हमारी श्रृंखला में वार्तालाप किया है, इस श्रृंखला में हम इन दो अन्य मुख्य विषयों के ऊपर ध्यान केन्द्रित करेंगे।

उत्तरोत्तर अध्यायों में, हम परमेश्वर के गुणों और कार्यों के ऊपर कई विशेषताओं की खोज करेंगे, परंतु इस समय हम यहाँ पर केवल एक ही अवधारणा का परिचय देंगे। प्रथम, हम ईश्वरीय गुणों, या परमेश्वर कौन है, के ऊपर ध्यान देंगें। और दूसरा, हम ईश्वरीय कार्यों की ओर मुड़ेंगे, या परमेश्वर क्या करता है। आइए परमेश्वर के ईश्वरीय गुणों से आरंभ करें।

ईश्वरीय गुण

ईश्वरीय गुणों के विषय का परिचय दो चरणों में कराना सहायतापूर्ण होगा। हम परमेश्वर के गुणों की मूल धारणा से आरंभ करेंगे। तब हम ईश्वरीय गुणों के प्रकारों की जाँच करेंगे जो कि अक्सर विधिवत धर्मविज्ञान में भिन्न रूपों में पहचाने गए हैं। इसलिए, ईश्वरीय गुणों की मूल धारणा क्या है?

मूलभूत धारणा

यदि हमें अधिकांश मसीहियों को यह पूछना हो कि, "परमेश्वर के क्या गुण हैं?" तो हो सकता है कि कदाचित् वह यह कहें कि परमेश्वर के गुण वे सारी योग्यताएँ या चारित्रिक गुण हैं जिन्हें पवित्रशास्त्र परमेश्वर से सम्बिन्धित करता है। ठीक है, यह दृष्टिकोण तब तक सही है जब तक यह इसे माना जाता रहे। परंतु पारंपरिक धर्मविज्ञान में वाक्यांश "परमेश्वर के गुण" कुछ विशेष बातों की संकेत देता है।

विधिवत धर्मविज्ञान में ईश्वरीय गुण:

> परमेश्वर के सार की पूर्णताएँ विभिन्न तरह के ऐतिहासिक प्रगटीकरणों के द्वारा प्रकट की गई हैं।

यह परिभाषा दो प्राथमिक तथ्यों को उजागर करती हैं जो कि परमेश्वर के गुणों के ऊपर औपचारिक विचार विमर्श को चित्रित करती हैं। प्रथम स्थान पर, परमेश्वर के गुण "परमेश्वर के सार की

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पूर्णताएँ हैं।" आधुनिक सुसमाचारवादी अक्सर परमेश्वर के सार की ओर संकेत नहीं करते हैं। इसलिए, इस धारणा की खोज करनी सहायतापूर्ण होगा।

शब्द "सार" के साथ आरंभ करते हुए, जो कि लैटिन शब्द *इशैन्सिया* के अनुवाद का अर्थ "सार" या "अस्तित्व" के रूप में करता है। लैटिन धर्मविज्ञान में, परमेश्वर का सार निकट घनिष्ठता के साथ शब्द *सब्सटैन्सिया* या "तत्व" के साथ सम्बद्ध है। धर्माध्यक्षीय और मध्यकालीन धर्मविज्ञानियों ने इन शब्दों को नव-अफलातूनवाद और अरस्तु के दार्शनिक विचारों से अपनाया था। अब प्लूटो और अरस्तु के दृष्टिकोण में सार का विचार विभिन्न तरह से पाया जाता है। और सार की धारणा के संबंध में कई महत्वपूर्ण जटिलताएँ आधुनिक दर्शनशास्त्र में उठ खड़ी हुई हैं। परंतु आत्मसात् करने के लिए यह मूल विचार कठिन नहीं है।

सरल शब्दों में, किसी वस्तु का "सार," "अस्तित्व" या "तत्व" एक न परिवर्तित होने वाली वास्तविकता होती है जो इसके सभी बाहरी स्वरूप, परिवर्तित होते प्रगटीकरणों की पृष्ठभूमि में होती हैं। मसीही धर्मविज्ञानियों ने सार के इसी विचार से अपने अध्ययन को आधारित किया है जब उन्होंने परमेश्वर के गुणों और पूर्णताओं के ऊपर विचार विमर्श किया।

सामान्य रूप में, परमेश्वर के सार में चार महत्वपूर्ण भिन्नताएं सम्मिलित हैं। परमेश्वर का सार, परमेश्वर स्वयं क्या है; परमेश्वर की पूर्णताएँ या गुण, परमेश्वर के सार की योग्यताएँ; परमेश्वर का दीर्घकालिक अवधि तक चलने वाला ऐतिहासिक प्रकटीकरण, उसका समय की एक दीर्घकालिक अवधि में स्व-प्रकटीकरण; और परमेश्वर का अल्पकालिक का ऐतिहासिक प्रकटीकरण, उसका समय की अवधि में अपेक्षाकृत स्वयं का प्रकटीकरण अल्पकालिक का प्रकटीकरण।

जो कुछ हम यहाँ कर रहे हैं उसका स्पष्टीकरण करने के लिए, आइए इन विभिन्नताओं को एक व्यक्ति के उदाहरण का उपयोग करते हुए करें। हम कहेंगे कि यह विशेष व्यक्ति कलीसिया में रविवार के दिन एक एकल कलाकार है। वह एक किसान है जो कि अपने गाय से अपने खेत में दो बार दूध दुहता है। वह एक पति भी है और एक दादा भी है। और इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, एक मसीही विश्वासी होने के नाते, हम जानते हैं कि वह परमेश्वर का स्वरूप, परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में नियुक्ति और परमेश्वर का सेवक है।

हम जानते हैं कि इस व्यक्ति के बारे में कुछ तथ्य अल्पकालिक अवधि के ऐतिहासिक प्रकटीकरण की ओर संकेत देते हैं। ये बातें उसके बारे में अब और कभी कभी सत्य होती हैं। वह कलीसिया में एक एकल कलाकार है, परंतु केवल रविवार के दिन ही। वह गाय दुहता है, परंतु केवल दिन में दो ही बार। जबकि ये विवरण उसके प्रति सत्य हैं, यह उसके सार का उल्लेख नहीं करते हैं। इसकी अपेक्षा, वह वही व्यक्ति रहता है जब वह स्वयं को अन्य गतिविधियों में सम्मिलित करता और जब नहीं करता है।

इनमें से कुछ विवरण अपेक्षाकृत दीर्घकालिक अवधि के ऐतिहासिक प्रगटीकरणों की ओर संकेत करते हैं कि वह व्यक्ति कौन है। वह एक पति है और दादा है। यह विवरण दीर्घकालिक अवधि के समय के लिए लागू होते हैं, परंतु यह आवश्यक नहीं हैं कि वह व्यक्ति कौन है। वह सदैव एक पति या एक दादा नहीं रहा था। परंतु वह सदैव एक ही व्यक्ति रहा है।

जब हम इस व्यक्ति को परमेश्वर के स्वरूप के रूप में, परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में नियुक्ति और परमेश्वर के सेवक के रूप में बोलते हैं, तो हम उसके सार के स्थाई गुणों की बात कर रहे हैं। चाहे उसके जीवन में कुछ भी क्यों न हो जाए, ये विवरण उसके लिए सदैव सत्य रहेंगे।

परंतु यदि हमें उन सभी को जोड़ देना होता जो हम उसके बारे में जानते हैं, जिसमें उसके स्थाई गुण भी सम्मिलित हैं, हम जान जाएंगे कि हमारे पास केवल उसके सार को देखने की झलकियाँ ही हैं। इस व्यक्ति का सार कुछ सीमा तक मायावी ही रहता है, सदैव पूरी तरह आत्मसात् किए जाने से परे।

कई तरह से, विधिवत धर्मविज्ञानी भी कुछ तरह की भिन्नताओं को परमेश्वर विज्ञान में करते हैं। अब, जैसा कि हम सभी जानते हैं, पवित्रशास्त्र परमेश्वर के स्वरूप को निर्मित करने के लिए मना करता है। इसलिए, हम यहाँ पर परमेश्वर को चित्रण करने के प्रयास को नहीं करेंगे। परंतु परमेश्वर के स्वरूप को समझने में हमारी सहायता करने के लिए हम एक रूपक का उपयोग करेंगे। परमेश्वर के सार को प्रतिनिधित्व करती हुई अंतरिक्ष में एक निहारिका की कल्पना करें। इस निहारिका के चारों और धब्बेदार-शीशे की खिड़कियाँ हैं जो कि परमेश्वर के सार के गुण या पूर्णताओं को प्रस्तुत कर रहे हैं। इससे परे, तारों और ग्रहों की प्रणाली की कल्पना करें जो कि इस केन्द्रीय निहारिका से विस्तारित हो रही है जो कि परमेश्वर के दीर्घकालिक प्रकटीकरण को प्रस्तुत कर रही हैं। और अन्त में, और अधिक दूर वाले तारों और ग्रहों की कल्पना करें जो कि परमेश्वर के अल्पकालिक प्रकटीकरण को प्रस्तुत कर रही है। परमेश्वर के सार के मध्य यह भिन्नता, उसके गुणों और उसके इतिहास में दीर्घ और अल्पकालिक प्रकटीकरण पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञान में परमेश्वर के धर्मशिक्षा में विचार विमर्श के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

1530 में लिखे गए लूथरन अगुसबर्ग *विश्वास-अंगीकार* के प्रथम अनुच्छेद को सुनिए, जो *धर्म के ऊपर लिखे हुए उन्तालीस एंग्लीकन अनुच्छेदों* और *धर्म के ऊपर लिखे हुए पच्चीस मेथौडिस्ट अनुच्छेदों* के सदृश है:

> यहाँ पर एक ईश्वरीय सार या तत्व है जो परमेश्वर है जिसे परमेश्वर पुकारा जाता है: जो शाश्वत, शरीर रहित, अंग रहित, अनन्त सामर्थ्य, ज्ञान, और भलाई के साथ, सृष्टिकर्ता और सभी वस्तुओं को संभाले हुए, दृश्य और अदृश्य है।

जैसा कि हम यहाँ पर देखते हैं कि, अंगीकार स्पष्ट रूप से "एक ईश्वरीय सार" के होने की ओर संकेत देता है। कुल मिलाकर, परमेश्वर का सार एक अपरिविर्तित रहने वाली वास्तविकता है जो कि उन तरीकों की पृष्ठभूमि में रहती है जिसमें इतिहास की जीवन-गति में परमेश्वर ने स्वयं को प्रकाशित किया है।

दुर्भाग्य से, धर्म सुधार युग से पहले, अधिकांश धर्मवैज्ञानिक जो कि मसीही रहस्यवाद की ओर झुके हुए थे, ने यूनानी विचारधारा प्रभावित दर्शनशास्त्रों का अनुसरण किया और निष्कर्ष निकाला कि परमेश्वर के सार रहस्य से घिरा हुआ है। इस दृष्टिकोण में, परमेश्वर का प्रकाशन हमें बहुत थोड़ा ही, यदि बताता है तो बहुत थोड़ा ही, उसके शाश्वत सार के बारे में बताता है। वे केवल हमें उसके द्वितीय, परिवर्तित होते हुए, ऐतिहासिक प्रगटीकरणों के बारे में बताते हैं। अब, सुसमाचारवादी सहमत है कि परमेश्वर के सार के बारे में अनन्त रूप से बहुत कुछ अधिक है इसकी अपेक्षा कि जितना हम जान सकते हैं। परंतु इतना होने पर भी, सुसमाचारवादी जोर देते हैं कि परमेश्वर ने वास्तव में अपने ईश्वरीय सार के कुछ गुणों, या कुछ ही योग्यताओं को प्रकट किया है। यह मान्यता स्पष्ट रूप से पवित्रशास्त्र की शिक्षा का अनुसरण करती।

एक बार फिर से *अगुसबर्ग विश्वास-अंगीकार* के प्रथम अनुच्छेद की ओर देखें। "एक ईश्वरीय सार" का उल्लेख करने के तुरन्त पश्चात् अंगीकार परमेश्वर के सार के कई गुणों या योग्यताओं की ओर मुड़ता है। परमेश्वर शाश्वत, शरीर रहित, अंग रहित, अनन्त सामर्थ्य, ज्ञान, और भला के साथ है।" परमेश्वर के ये गुण – ये शाश्वत, अपरिविर्तनीय योग्यताएँ – परमेश्वर के सार को चित्रित करते हैं।

कई अवसरों पर, बाइबल के लेखकों ने स्पष्ट रूप से परमेश्वर के शाश्वत, आवश्यक पूर्णताओं की ओर संकेत किया है। उदाहरण के लिए, भजन संहिता 34:8 घोषणा करता है कि, "परमेश्वर भला है।" पौलुस ने 1 तीमुथियुस 1:17 में लिखा है कि परमेश्वर "शाश्वत" या सनातन है। जब हम पूरे पवित्रशास्त्र का अध्ययन करते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि चाहे कुछ भी क्यों न हो जो कुछ परमेश्वर किसी एक परिस्थिति में कहता और करता है, चाहे कुछ भी क्यों न हो वह कितनी भी भिन्नता का प्रदर्शन क्यों न करता हो, वह सदैव भला है और वह सदैव शाश्वत है। इसी तरह की बात जो कुछ पवित्रशास्त्र परमेश्वर

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

की अनन्तता, उसकी पवित्रता, उसके न्याय, उसके ज्ञान, उसकी अबोधगम्यता, उसके सर्वसामर्थी और कई अन्य ईश्वरीय गुणों के बारे में कहे जा सकते हैं। यह सभी उसके ईश्वरीय सार के स्थाई गुण हैं जिन्हें पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से उल्लेख करता है।

> परमेश्वर का एक गुण वह होता है जो कि स्वयं परमेश्वर के आरंभ से उसमें निहित है। यह वह जो परमेश्वर को परमेश्वर बनाता है। आप उसे उसका स्वभाव, उसका तत्व कहते हैं। यह ऐसी वास्तविकता है जिसे पिता, पुत्र और पवित्रआत्मा सभी आपस में पूरी तरह से साझा करते हैं। और इसलिए, यह वह है जो परमेश्वर को, कई बातों में हम सीमित प्राणियों से भिन्न करता है। हाँ, और इसलिए, यह वह है जो परमेश्वर की "भलाई" को परिभाषित करता है।
>
> - डॉ. जे स्कॉट होरेल

परंतु अब आइए ईश्वरीय गुणों की हमारी परिभाषा की एक अन्य झलक को देखें। परमेश्वर के सार की पूर्णताएँ के होने के अतिरिक्त, ईश्वरीय गुण विभिन्न तरह के ऐतिहासिक प्रगटीकरणों के माध्यम से भी प्रकाशित होते हैं।

हमने अभी अभी कहा था कि, पवित्रशास्त्र कभी कभी अपेक्षाकृत परमेश्वर के शाश्वत गुणों को प्रत्यक्ष में संकेत देते हैं। परंतु, अधिक समयों में, वे परमेश्वर के गुणों को विवरणों, नामों और पदवियों, रूपकों, अलंकारों और इतिहास में उसकी गतिविधियों के उल्लेखों के द्वारा अप्रत्यक्ष माध्यम से प्रदर्शित करते हैं। इनमें से कोई भी प्रकटीकरण उसके सार के विपरीत नहीं है – परमेश्वर सदैव स्वयं का प्रकटीकरण उन तरीकों में करता है जो कि वह जो कुछ है उसके प्रति सत्य हो – परंतु, विधिवत धर्मविज्ञान में, परमेश्वर के गुण वैसे ही नहीं हैं जैसे कि उसके प्रकटीकरण। इसकी अपेक्षा, हम परमेश्वर के गुणों का निर्धारण यह पूछते हुए करते हैं कि: "परमेश्वर के साथ सदैव क्या सत्य रहा होगा, और परमेश्वर के साथ सदैव क्या सत्य रहना चाहिए जो उसके सभी तरीकों की व्याख्या करे जिसमें उसने स्वयं को इतिहास में प्रकट कया है?"

अब हमें यहाँ बहुत अधिक सावधान रहने की आवश्यकता है। परमेश्वर के गुणों और उसके प्रगटीकरणों के मध्य में यह भिन्नता की बात पर बने रहना अक्सर कठिन नहीं है जब हम उन बातों का निपटारा करते हैं जो कि परमेश्वर के साथ अपेक्षाकृत अल्पकालिक अवधि के लिए सत्य थी। उदाहरण के लिए, यहेजकेल 8:18 में, परमेश्वर ने कहा कि वह उसके लोगों की प्रार्थनाओं को नहीं सुनेगा। परंतु स्पष्ट रूप से, हमें नहीं कहना चाहिए कि यह प्रार्थनाओं का इन्कार करना परमेश्वर के सार में है। कई अन्य स्थानों पर, पवित्रशास्त्र हमें बताता है कि परमेश्वर प्रार्थनाओं को नहीं सुनता है। ये दोनों तरह के परमेश्वर के विवरण जो कुछ परमेश्वर किसी एक निश्चित समय पर है, के समय सत्य ऐतिहासिक प्रकटीकरण हैं। परंतु कोई भी उसके सार का गुण नहीं है। इसकी अपेक्षा, परमेश्वर के गुण उसके सार की शाश्वत पूर्णताएँ हैं जो कि उससे सत्य हैं दोनों में जब वह सुनता है और जब वह प्रार्थनाओं को नहीं सुनता है।

अब, इसके विपरीत, परमेश्वर के गुणों और उसके ऐतिहासिक प्रगटीकरणों के मध्य में भिन्नता के अन्तर को पता लगाना कठिन है जब वे अपेक्षाकृत दीर्घकालिक अवधि तक बने रहते हैं। उदाहरण के लिए, हम हो सकता है कि यह सोचने की परीक्षा में पड़ जाएँ कि धैर्य परमेश्वर का एक गुण है क्योंकि उसने पीढ़ी दर पीढ़ी पापियों के प्रति धैर्य को प्रकट किया है। परंतु, जैसा कि हम बाइबल से जानते हैं कि, परमेश्वर का धैर्य इतिहास में भिन्न समयों पर भिन्न लोगों के साथ समाप्त हो गया था। और अन्त में सभी पापियों के लिए अन्तिम न्याय के समय हो जाएगा जब मसीह अपनी महिमा सहित पुन: वापस आएगा।

इसलिए, विधिवत धर्मविज्ञान के तकनीकी अर्थ में, यहाँ तक कुछ ऐसा लम्बे-समय तक बने रहने वाला गुण जैसे कि ईश्वरीय धैर्य परमेश्वर के सार का शाश्वत गुण नहीं है।

हम इस भिन्नता को आने वाले अध्यायों में और अधिक विस्तार के साथ देखेंगे। परंतु इस समय, मूल विचार स्पष्ट होना चाहिए। परमेश्वर स्वयं को अल्पकालिक और दीर्घकालिक अवधि में इतिहास में निश्चित तरीके से प्रकट करता है। परंतु परमेश्वर के गुण परमेश्वर की वे योग्यताएँ हैं जो कि उसके साथ सदैव के लिए सत्य हैं, और वे सदैव उसके साथ सत्य रहेंगी।

ईश्वरीय गुणों और इस मूल धारणा को ध्यान में रखते हुए, हमें हमारे दूसरे विषय: परमेश्वर के गुणों के विभिन्न प्रकार की ओर मुड़ना चाहिए। किस तरह से धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर के सार की पूर्णताओं को पहचाना और वर्गीकृत किया है?

भिन्न प्रकार

क्योंकि बाइबल परमेश्वर के सारे गुणों की पहचान स्पष्ट रूप से नहीं करती है, और क्योंकि यह उन्हें हमारे लिए वर्गीकृत नहीं करती हैं, धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर की पूर्णताओं को विभिन्न तरीकों से समूहों में रख दिया है। अधिकत्तर विद्वानों ने परमेश्वर के गुणों को उन बातों के आधार पर वर्गीकृत किया है जिनका उल्लेख हमन इस अध्याय में पहले ही कर लिया है: "कारक का तरीका," "निषेध का तरीका," "श्रेष्ठता का तरीका।" परमेश्वर के गुणों को वर्गीकृत करने का एक अन्य तरीका परमेश्वर के स्वरूप में मनुष्य की वर्तमान समझ पर आधारित है। इस दृष्टिकोण में, परमेश्वर की पूर्णताओं को उसके "अस्तित्व," उसकी "बुद्धि," उसकी "इच्छा" और उसके "नैतिक चरित्र" के रूप में बोलना सामान्य बात है। अब, वर्गीकरण की इनमें से कोई भी पद्धति अधिक प्रमुख नहीं रही है। परंतु हमें इन्हें ध्यान में रखना चाहिए क्योंकि वे समय समय पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में प्रकट होती रहती हैं, जब धर्मवैज्ञानिक परमेश्वर के गुणों के बारें में विचार विमर्श करते हैं।

अधिकांश समयों पर, सुसमाचारवादियों ने परमेश्वर की पूर्णताओं को दो मुख्य तरह के गुणों में विभाजित करने का पक्ष लिया है। पहले प्रकार को परमेश्वर के अकथनीय गुण कह कर पुकारा गया है। और दूसरे प्रकार का उल्लेख उसके कथनीय गुणों की ओर संकेत करके किया गया है। आइए इन दोनों श्रेणियों, परमेश्वर के अकथनीय गुणों से आरंभ करके खोला जाए।

अकथनीय। प्रसिद्ध धर्मविज्ञानियों ने अक्सर इस द्वि-भागी वर्गीकरण की सीमाओं की ओर संकेत दिया है, और हम इनमें से कुछ विषयों को आने वाले अध्यायों में देखेंगे। परंतु परमेश्वर के सार की पूर्णताओं के लिए बोलने का यह एक सामान्य तरीका है।

शब्द "अकथनीय" का अर्थ "साझा करने में असमर्थ होने" से है। इस कारण, परमेश्वर की अकथनीय गुण उसके सार की ऐसी पूर्णताएँ हैं जिसमें सृष्टि – परमेश्वर के स्वरूप में मनुष्य सहित – स्वयं उसके साथ साझा नहीं कर सकती है। इस प्रकार, अकथनीय गुण मोटे रूप में परमेश्वर की उन पूर्णताओं के सदृश हैं जिन्हें हम "निषेध के तरीके" के माध्यम से निर्धारित करते हैं। ये गुण इस बात पर केन्द्रित है कि परमेश्वर उसकी सृष्टि से कैसे भिन्न है।

जैसा कि हमने एक पल पहले देखा था, *अगुसबर्ग विश्वास-अंगीकार* का प्रथम अनुच्छेद परमेश्वर के छह गुणों की ओर संकेत करता है। वह शाश्वत, शरीर रहित, अंग रहित, अनन्त सामर्थ्य, ज्ञान और भलाई के साथ है। यद्यपि यह ज्यादा सरलीकृत करना है, परमेश्वर के अकथनीय गुणों के लिए यह एक सामान्य बात है कि वे शाश्वत, अंग रहित, अनन्त सामर्थ्य, ज्ञान और भलाई के शब्दों के साथ सम्बद्ध हो। परमेश्वर शाश्वत है; हम अस्थाई हैं। वह शरीर रहित है; हमारे पास शरीर है। वह अंग रहित है; हम अंगों में विभाजित हैं। वह असीमित है; हम सीमित हैं।

अब, क्योंकि परमेश्वर को हमारे साथ मानवीय शब्दों में संचार करना है, इसलिए पवित्रशास्त्र कभी कभी इन गुणों और सृष्टि के मध्य कमजोर, सकारात्मक तुलनाओं को करते हुए निष्कर्ष निकालता

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

है। तौभी, बिना किसी सन्देह के, बाइबल परमेश्वर के इन गुणों के मूल रूप से परमेश्वर क्या है और उसकी सृष्टि क्या है, के मध्य में अन्तर करते हुए व्याख्या करती है। परिणामस्वरूप, पवित्रशास्त्र मनुष्य को परमेश्वर की नकल इस तरह से करने की बुलाहट नहीं देता है। हमें शाश्वत, शरीर रहित, अंग रहित, या अनन्त होने का प्रयास करने के लिए निर्देश नहीं दिया गया है। इसके विपरीत, पवित्रशास्त्र हमें परमेश्वर के इन गुणों को नम्रता भरी आराधना और उसकी स्तुति करने के लिए कि वह कैसे हमसे इतना ज्यादा भिन्न है, के लिए बुलाहट देता है।

परमेश्वर के अकथनीय गुणों के विचार को ध्यान में रखते हुए, आइए परमेश्वर के गुणों के दूसरे प्रकार: परमेश्वर के कथनीय गुणों के ऊपर ध्यान दें।

कथनीय। *अगुसबर्ग विश्वास-अंगीकार* के प्रथम अनुच्छेद में सूचीबद्ध गुणों में, कथनीय गुणों को अक्सर सामर्थ्य, ज्ञान और भलाई के साथ सम्बद्ध किया हुआ है।

शब्द "कथनीय" संकेत देती है कि कोई वस्तु साझा किया जाने योग्य है। इस घटना में, हम इस सच्चाई की ओर संकेत दे रहे हैं कि परमेश्वर की कुछ शाश्वत पूर्णताएँ उसकी सृष्टि के साथ साझा की जा सकती है, विशेष कर परमेश्वर के स्वरूप में निर्मित मनुष्य के साथ। मनुष्य के पास में सामर्थ्य, ज्ञान और भला – अपूर्णता के साथ और मानवीय पैमाने पर है – परंतु तिस पर भी हम इन योग्यताओं के साथ हैं।

वह मूल तरीका जिसमें हम परमेश्वर के कथनीय गुणों को तुलना के माध्यम से समझते हैं। इस अर्थ में, कथनीय गुण मोटे तौर पर उन बातों के सदृश हैं जिन्हें मध्यकालीन विद्वतापूर्ण धर्मविज्ञानियों ने "कारक के तरीके" और "श्रेष्ठता के तरीके" के माध्यम से परिचित कराया है। सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में, हमें अक्सर आदेश दिया है कि न केवल हम इन ईश्वरीय गुणों की प्रशंसा करें, अपितु इनकी नकल भी करें। हमें सामर्थ्य के हमारे अभ्यास में अधिक से अधिक परमेश्वर के जैसे होते जाना है। और हमारे जीवनों में ज्ञान और भलाई का प्रदर्शन और विकास करते हुए उसकी नकल करनी है।

परमेश्वर की पूर्णता की इन श्रेणियों के बारे बहुत सी बातों के कहने की आवश्यकता है। और हम इनकी विशेषताओं के बारे में इस श्रृंखला के उत्तरोत्तर के अध्याय में और ज्यादा खोज करेंगे। परंतु इस समय, हमें केवल इतना ध्यान में रखना चाहिए कि परमेश्वर की पूर्णताओं को एक दूसरे से भिन्न करने के लिए तरीकों में सबसे सामान्य उन्हें अकथनीय और कथनीय होने वाले गुणों के रूप बोलना है।

> वे विद्यार्थी जो विधिवत धर्मविज्ञान का अध्ययन करने की कोशिश कर रहे हैं, के लिए परमेश्वर के अकथनीय और कथनीय गुणों के मध्य की भिन्नता का समझना अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योंकि हमें यह समझना आवश्यक है कि वह क्या है जो हमें भिन्न कर देता है। ठीक है न? परमेश्वर पूर्ण रूप से भिन्न है, सृष्टि से अलग, तौभी हम परमेश्वर के स्वरूप में निर्मित हैं। इसलिए, हमारे लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि हममें परमेश्वर जैसी कौन सी बातें हैं जो हमें उसके स्वरूप को प्रकट करने वाली बनाती हैं और ऐसी कौन सी बातें हैं जो नहीं बनाती हैं। और इसलिए यह बात सदैव ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर जो कुछ है उस सब में अनन्त और शाश्वत और अपरिवर्तनीय है, और यद्यपि हम उन सभी विभिन्न तरीकों में सीमित और परिवर्तनीय और अस्थिर, और असफल हैं, हम में फिर भी हमारे अस्तित्व के कुछ निश्चित पहलू हैं जो कि परमेश्वर के जैसे हैं जब ऐसी चीजों की बात है जैसे हमारे पास बुद्धि हो सकती है, हम प्रेम कर सकते हैं, हम न्याय और दया की खोज कर सकते हैं। यह वे बातें हैं जिन्हें परमेश्वर पूर्णता के साथ करता है – हम इन्हें सीमित स्तर में करते हैं – परंतु हमारे लिए यह समझना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि हम उसके स्वरूप और वह कौन है, को हमारे सृष्टिकर्ता के रूप में प्रकट करने वाले हैं।

- प्रोफेसर ब्रांडोन पी. रोबिन्स्

अभी तक, हमने परमेश्वर के गुणों और कार्यों की धारणा को उसके ईश्वरीय गुणों को देखने के द्वारा परिचित किया। अब, आइए हम इस जोड़े के दूसरे हिस्से परमेश्वर के ईश्वरीय कार्यों की ओर मुड़ें।

ईश्वरीय कार्य

इस अध्याय में हम ईश्वरीय कार्यों के ऊपर संक्षिप्त में स्पर्श करेंगे क्योंकि हम इस विचार को और अधिक विस्तृत रूप में इस श्रृंखला के अन्त में खोज करेंगे। परंतु एक अवलोकन के रूप में, हम सब से पहले ईश्वरीय कार्यों की मूल धारणा की व्याख्या करेंगे; और दूसरा हम परमेश्वर के कार्यों के प्रकारों का परिचय देंगे। आइए सबसे पहले ईश्वरीय कार्यों की मूल धारणा के ऊपर ध्यान दें।

मूलभूत धारणा

यदि हमें अधिकांश सुमसाचारवादियों से यह पूछना पड़े कि, "परमेश्वर के क्या कार्य हैं?" तो हम में से अधिकांश बस केवल उन स्थानों की ओर संकेत देंगे जहाँ पर पवित्रशास्त्र कहता है परमेश्वर ने यह या वह किया। और यह सही होगा, जब तक कि यह माना जाता रहे। परंतु विधिवत धर्मविज्ञानियों ने ईश्वरीय कार्यों का अध्ययन ठीक वैसे ही करते हैं जैसे ईश्वरीय गुणों का अध्ययन किया जाता है। विशेष ऐतिहासिक घटनाओं के ऊपर ध्यान केन्द्रित करने की अपेक्षा, वे यह जानने की कोशिश करते हैं कि इन घटनाओं के पीछे क्या कुछ पड़ा हुआ है। वह पूछते हैं कि, "हम क्या जान सकते हैं कि जो कुछ परमेश्वर ने किया, कर रहा है और करेगा वह सदैव सत्य है?"

ईश्वरीय कार्यों के लिए इस मूलभूत दृष्टिकोण को हम विधिवत धर्मविज्ञान में यह कहने के द्वारा सारांशित कर सकते हैं, कि ईश्वरीय कार्यों का विषय संकेत देता है कि:

> कैसे परमेश्वर अपने शाश्वत प्रयोजनों के अनुसार सभी कार्यों को करता है।

हम इस विषय के दो पहलुओं को उजागर, इस तथ्य के साथ आरंभ करते हुए करेंगे कि ईश्वरीय कार्यों में सभी बातें सम्मिलित हैं। धर्मविज्ञान के नए विद्यार्थियों के लिए यह विचार कि ईश्वरीय कार्यों में प्रत्येक वह घटना सम्मिलित हैं जो अक्सर थोड़ी सी सैद्धान्तिक और अटकल से भरी हुई आभासित होती है। इसलिए, हमें परमेश्वर के कार्यों के इस आयाम के बारे में कुछ शब्दों को कहना चाहिए। इफिसियों 1:11 में, पौलुस परमेश्वर का विवरण ऐसे देता है:

> उसी में जिसमें हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता (इफिसियों 1:11)।

यह हम देखते हैं कि पौलुस इस तथ्य का उल्लेख करता है कि परमेश्वर "सब कुछ करता है।" वह यह नहीं कहता है कि परमेश्वर कुछ घटनाओं, या यहाँ तक बहुत सी घटनाओं में सम्मिलित है। उसके ध्यान में, कुछ अर्थ में, यह रहा होगा कि, परमेश्वर प्रत्येक घटना को करता है जो कभी घटित हुई या कभी घटित होगी।

यह आधुनिक सुसमाचारवादियों के लिए परमेश्वर के कार्यों के बारे में इस तरह के विस्तृत पैमाने पर सोचने के लिए असामान्य सी बात है। क्योंकि हम में से बहुतों के लिए, जब हम पवित्रशास्त्र को पढ़ते हैं और निष्कर्ष निकालते हैं कि परमेश्वर केवल कुछ ही बातों को करता है, जबकि सृष्टि के अन्य हिस्से अन्य बातों को करते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अब, इस तरह की विभिन्नताएँ पवित्रशास्त्र में अवश्य प्रकट होती हैं। बाइबल परमेश्वर को इस संसार में कई बार प्रत्यक्ष कार्य करते हुए बोलती है। उदाहरण के लिए, उसने लाल समुद्र से छुटकारा दिया। और पवित्रशास्त्र अलौकिक जीवों के द्वारा घटनाओं के घटित होने के ओर भी संकेत देती है, जैसे कि जब शैतान ने अय्यूब को परमेश्वर को श्राप देने की परीक्षा में डाला था। इससे भी परे, हम ऐसे मनुष्यों को बारे में पढ़ते हैं जो घटनाओं को घटित होने के कारण बनते हैं। उदाहरण के लिए, दाऊद ने सुलेमान के मन्दिर के निर्माण के लिए बहुत कठिन मेहनत की। हम पशुओं और पौधों के द्वारा इस संसार में पड़ने वाले प्रभावों को पढ़ते हैं। और बाइबल निर्जीव वस्तुओं, जैसे सूर्य, पृथ्वी के जीवन को प्रभावित कर रहा है, के बारे में भी बात करती है।

परंतु पारंपरिक मसीही धर्मविज्ञान में प्रश्न यह है कि: क्या हम जिसे "परमेश्वर के कार्य" कह कर पुकारते हैं उसे केवल उन घटनाओं तक सीमित करना चाहिए, जिन्हें पवित्रशास्त्र केवल परमेश्वर के साथ ही सम्बद्ध करता है? पवित्रशास्त्र का अनुसरण करते हुए, पारंपरिक मसीही धर्मविज्ञान की मुख्यधारा ने इस प्रश्न का उत्तर "नहीं" के रूप में गूँजती हुई आवाज के साथ दिया है। अरस्तु से शब्दावली को लेते हुए, मसीही धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर को सभी वस्तुओं के "प्रथम कारक" के रूप में विवरण दिया है। इवैन्जेलिकल अर्थात् सुसमाचारवादी धर्मविज्ञान में, इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर के, प्रथम कारक होने के नाते केवल इतिहास का ही आरंभ नहीं हुआ। इसकी अपेक्षा, परमेश्वर ही प्रत्येक घटना के पीछे अन्तिम कारक है जो कि इतिहास में किसी भी क्षण में घटित हुई हो।

परंतु परमेश्वर को प्रथम कारक की संज्ञा देने के अतिरिक्त, इवैन्जेलिकल अर्थात् सुसमाचारवादी धर्मविज्ञानियों ने द्वितीय कारक के लिए भी बोला है। द्वितीय कारक सृजी हुए प्राणी या वस्तुएँ हैं जो कि वास्तविक, परंतु घटनाओं के घटित होने के पीछे द्वितीय भूमिकाओं के कारक हैं।

प्रथम और द्वितीय कारक के पीछे यह भिन्नता इस तथ्य के ऊपर आधारित है कि पवित्रशास्त्र केवल कुछ ही प्रभावशाली, आश्चर्यजनक घटनाओं का निपटारा ईश्वरीय कार्यों के रूप में करती है – जैसे इस्राएल का लाल समुद्र पर छुटकारा होना। अय्यूब की पुस्तक स्पष्ट करता है कि परमेश्वर ने शैतान को अय्यूब की जाँच के लिए नियुक्त किया। 1 इतिहास 29:16 में दाऊद ने स्वयं परमेश्वर को सुलेमान के मन्दिर को निर्माण करने के लिए दी गई सफलता के लिए महिमा दी है। भजन संहिता 147:7-9 जैसे प्रसंग इंगित करते है कि जो कुछ पशु और पौधे करेंगे वह सब कुछ परमेश्वर के नियंत्रण में है। और निर्जीव वस्तुओं के प्रभाव का श्रेय, जैसे सूर्य यशायाह 45:6-7 जैसे प्रसंगों में परमेश्वर को दिया गया हैं।

इस श्रृंखला में बाद में, हम यह खोज करेंगे कि कैसे परमेश्वर प्रथम कारक है, या दूसरे कारक, सृष्टि का उपयोग विभिन्न तरीकों से करता है। और हम देखेंगे विशेष रूप से यह कैसे हमें समझने में सहायता करता है कि परमेश्वर बुराई का लेखक नहीं है। परंतु अभी के लिए, हम केवल इस बात की ओर संकेत देना चाहते हैं कि, एक तरह से या अन्य तरह से, परमेश्वर के कार्य में इतिहास में प्रकट होने वाली प्रत्येक बात सम्मिलित है, चाहे वह इन्हें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष ही क्यों न करता हो। यदि हम ईश्वरीय कार्यों की मूलभूत धारणा के सारांश को एक बार फिर से देखें, तो हम देख सकते हैं कि ईश्वरीय कार्य भी "[परमेश्वर के] शाश्वत प्रयोजनों के अनुसार हैं।"

जैसा कि हमने इस अध्याय में पहले देखा, धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर विज्ञान में परमेश्वर के शाश्वत, अपरिवर्तनीय गुणों के ऊपर बहुत अधिक ध्यान को दिया है। कुछ इसी तरह से, उन्होंने इस बात के ऊपर ध्यान दिया है कि कैसे परमेश्वर अपनी शाश्वत, अपरिवर्तनीय योजना या प्रयोजनों के अनुसार कार्य करता है। अब, यह कहना उचित होगा कि कई आधुनिक सुसमाचारवादी इस धारणा से अपरिचित हैं। और जो इन विषयों के ऊपर बात करते हैं उनके पास इनके प्रति भिन्न तरह की समझ है। इसलिए, हमें मूलभूत विचार की व्याख्या करने के लिए एक क्षण लेना चाहिए कि हमारे मन में क्या है। आपको स्मरण होगा, कि इफिसियों 1:11 में, पौलुस ने परमेश्वर की स्तुति ऐसे की थी:

> उसी में जिसमें हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता (इफिसियों 1:11)।

यहाँ पर ध्यान दें पौलुस ने केवल परमेश्वर के कार्य में "सब कुछ" होने के लिए बोलता है, अपितु परमेश्वर का प्रत्येक कार्य उसकी "मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार है।" यहाँ पर पौलुस पुराने नियम की उस धारणा का उल्लेख करता है कि परमेश्वर के पास इतिहास के लिए शाश्वत योजना है, एक ऐसी योजना जो कि निश्चित रूप से पूरी होगी। उदाहरण के लिए, यशायाह 46:10 को सुनिए जहाँ पर परमेश्वर ऐसे कहता है कि:

> मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूँ: मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूँगा (यशायाह 46:10)।

अब, परमेश्वर के कार्यों के यह पहलू इतना अधिक रहस्यमयी है कि विश्वासयोग्य मसीहियों ने इसे कई भिन्न तरीकों में समझा है। परंतु कुल मिलाकर, मुख्यधारा वाले मसीही धर्मविज्ञान ने सदैव यह पुष्टि की है कि परमेश्वर के पास एक शाश्वत योजना है। और उसका कार्यों में – इतिहास का प्रत्येक सम्मिलित आयाम – उसके शाश्वत प्रयोजनों को पूरा करता है। परमेश्वर इस बात से अन्जान नहीं है कि इतिहास में क्या कुछ घटित होगा। वह इतिहास के द्वारा कभी भी आश्चर्यचकित नहीं हुआ है। उसके प्रयोजन कभी निराश नहीं हुए हैं। चाहे यह कितने भी रहस्यमयी क्यों न हो, कुछ भी मसीह में परमेश्वर के इतिहास के लिए पूर्ण- व्यापक योजना से परे नहीं है।

> जब कभी संसार में कुछ घटित होता है, तो लोग आश्चर्यचकित होते हैं, "क्या यह ऐसा कुछ है जो कि वास्तव में परमेश्वर के मन में था या नहीं?" और विशेषरूप से जब संसार में बातें गलत हो जाती हैं तो हम आश्चर्य करते हैं, "इन सब में परमेश्वर कहाँ है और उसका प्रयोजन कहाँ है?" और मैं सोचता हूँ कि परमेश्वर की सर्वोच्चता के बाइबल आधारित धर्मशिक्षा की पूर्णता को समझना हमारे लिए सहायतापूर्ण होगा कयोंकि यह स्पष्ट है कि ऐसा कुछ भी नहीं है जो कि परमेश्वर की अन्तिम इच्छा और प्रयोजन के बाहर घटित हुआ हो। और ऐसे बहुत से स्थान हैं जहाँ पर पवित्रशास्त्र में हम इनकी ओर संकेत कर सकते हैं। इफिसियों 1 निश्चित ही, उनमें से एक स्थान है, जहाँ वह ऐसे कहता है कि परमेश्वर सब कुछ में उसकी इच्छा की मनसा के अनुसार के कार्य करता है। और इस तरह से कुछ भी जो कभी इतिहास में घटित हुआ है अंततः परमेश्वर के उद्देश्यों का हिस्सा है...और परमेश्वर का था – और यह हमारे लिए हमारे सीमित मनों के साथ महान् रहस्य की बात है – परमेश्वर के पास एक प्रयोजन है वह यह है कि वह मानवीय इतिहास के द्वारा कार्य कर रहा है।
>
> - डॉ. फिलिप्प रेयकेन

> यदि परमेश्वर सर्वज्ञानी है, यदि परमेश्वर के ज्ञान में अतीत, वर्तमान और भविष्य व्यापक है, तो सभी बातें संभव हैं और सभी बातें वास्तव में, तब सभी ऐतिहासिक घटनाएँ उसकी योजना का हिस्सा हैं।
>
> - डॉ. ग्लीन आर, केरिडर

ईश्वरीय कार्यों के ऊपर मूल धारणा को स्पर्श कर लेने के पश्चात्, हमें इस बात का भी उल्लेख करना चाहिए कि कैसे परमेश्वर के धर्मशिक्षा के ऊपर औपचारिक विचार विमर्श विभिन्न प्रकारों या ईश्वरीय कार्यों के प्रकारों में अन्तर करता है।

भिन्न प्रकार

केवल एक उदाहरण, एक बार फिर से *अगुसबर्ग विश्वास-अंगीकार* के पहले अनुच्छेद को सुनिए:

> यहाँ पर एक ईश्वरीय सार या तत्व है जो परमेश्वर है जिसे परमेश्वर पुकारा जाता है: जो शाश्वत, शरीर रहित, अंग रहित, अनन्त सामर्थ्य, ज्ञान, और भलाई के साथ, सृष्टिकर्ता और सभी वस्तुओं को संभाले हुए, दृश्य और अदृश्य है।

जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, परमेश्वर के कई गुणों को सुनने के पश्चात्, विश्वास अंगीकार दो तरह के ईश्वरीय कार्यों कि ओर हमारा ध्यान खींचता है। एक तरफ तो, यह उल्लेख करता है कि परमेश्वर... सभी वस्तुओं का, दृश्य और अदृश्य का सृष्टिकर्ता है। और दूसरी तरफ, यह उल्लेख करता है कि परमेश्वर...सभी दृश्य और अदृश्य वस्तुओं को संभाले हुए है।

अगुसबर्ग विश्वास-अंगीकार की ये स्वीकारोक्तियाँ दो तरह के ईश्वरीय कार्यों के मध्य विशेष, पारंपरिक अन्तर को प्रकट करती हैं। प्रथम परमेश्वर का सृष्टि का कार्य है। हम सभी जानते हैं कि, उत्पत्ति 1 में, बाइबल इस तरह से आरंभ करती है:

> आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की (उत्पत्ति 1:1)।

कई तरह से, पवित्रशास्त्र इस शिक्षा के साथ आरंभ होता है क्योंकि यह उस सब कुछ के आधार को निर्मित करता है जिसे हम परमेश्वर के कार्य के बारे में विश्वास करते हैं।

परमेश्वर विज्ञान में परमेश्वर के सृष्टि के कार्य के पारंपरिक अध्ययन को सारांशित करने के लिए कई तरीके हैं। और हम इन विषयों को आने वाले अध्यायों में खोज करेंगे। परंतु इस अध्याय के लिए, बस केवल तीन मुख्य बातों पर ही उल्लेख करना उचित है। प्रथम, सृष्टि की सच्चाई: कैसे जो कुछ अस्तित्व में है उसकी रचना परमेश्वर ने की है। दूसरा, सृष्टि की भिन्नताएँ: कैसे परमेश्वर ने आत्मिक और भौतिक लोकों में भिन्नताओं की रचना की है। और तीसरा, सृष्टि का उद्देश्य: कैसे परमेश्वर ने पहले सृष्टि की रचना उसके शाश्वत प्रयोजनों की प्राप्ति के लिए किया है।

सृष्टि के कार्य के अतिरिक्त, दूसरे तरह का ईश्वरीय कार्य परमेश्वर के विधान का कार्य है, या जैसे इसे अक्सर लिखा जाता है कि, वह सच्चाई कि परमेश्वर इस सृष्टि को संभाले हुए है।

दुर्भाग्य से, अधिकत्तर समयों में, सुसमाचारवादी मसीही विश्वासी आज इस बात को आत्मसात् नहीं कर पाते हैं कि परमेश्वर के विधान का कार्य कितना विशेष है। वे कल्पना करते हैं कि जब परमेश्वर ने इस संसार की रचना की, तो उसने इसे स्वयं के ऊपर निर्भरता की एक मात्रा दी ताकि यह स्वयं को बिना उसके ध्यान खीचें एक साथ स्थिर रहे। परंतु पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञान में, शब्द "विधान" – जिसे लैटिन शब्द प्रोविटेनिशिया से लिए गया है - में "किसी वस्तु पर ध्यान देना, या किसी वस्तु की देखभाल करने से है।" और ये शब्दावली मसीही विश्वास को प्रतिबिंबित करती है कि सृष्टि ठीक वैसे ही आज भी परमेश्वर के ऊपर निर्भर है जैसे यह सृष्टि के पहले क्षणों में थी। कुलुस्सियों 1:16-17 को सुनिए जहाँ पर प्रेरित पौलुस ने इन शब्दों को कहा है:

> क्योंकि उसी [मसीह] में सारी वस्तुओं की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएँ, क्या प्रधानताएँ, क्या अधिकार, सारी वस्तुएँ उसकी के द्वारा और उसी

के लिए सृजी गई हैं। वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुँ उसी में स्थिर रहती हैं (कुलुस्सियों 1:16-17)।

जैसा कि यह प्रसंग संकेत देता है, न केवल यह सत्य है कि मसीह ने सभी वस्तुओं की रचना की, यह भी उतना ही सत्य है कि सभी वस्तुएँ उसमें स्थिर रहती हैं। इस तरह की समानता को प्रस्तुत करते हुए, प्रेरित ने यह स्पष्ट कर दिया कि सृष्टि उस समय गिर जाएगी यदि परमेश्वर का विधान कार्यरत् नहीं होता – अर्थात् उसके द्वारा संभाले रखना और थामे रखने वाली देखभाल – निरन्तर सृष्टि में कार्यरत् है।

सरल शब्दों में कहना, बहुत कुछ सृष्टि के कार्य जैसा, विधान के कार्य को तीन तरीकों से सारांशित किया जा सकता है: सृष्टि के लिए परमेश्वर के विधानात्मक कार्य की सच्चाई, कि वह कैसे संसार और सब कुछ जो उसमें है, को संभाले हुए और इसे थामे हुए है; पर के विधानात्मक देखभाल की भिन्नता, कि वह कैसे विभिन्न तरीकों से सृष्टि के विभिन्न पहलुओं के साथ परस्पर सम्पर्क में रहता है; और परमेश्वर के विधानात्मक देखभाल का उद्देश्य, कैसे परमेश्वर यह सुनिश्चित करता है कि सृष्टि उसके शाश्वत प्रयोजनों को पूरा करेगी। हम इस अध्याय में इनके विवरणों को नहीं देखेंगे। परंतु, जैसे जैसे हम परमेश्वर के धर्मशिक्षा के ऊपर अपने अध्ययन में आगे बढ़ते हैं, हम और अधिक स्पष्टता से देखेंगे कि यह परमेश्वर के कार्यों, दोनों कार्यों को अर्थात् सृष्टि के कार्य और विधान के कार्य को समझना कितना महत्वपूर्ण है।

> ठीक है, हम परमेश्वर के विधान के बारे में बात कर रहे हैं, जो हम बात कर रहे हैं वह परमेश्वर की ओर से सृष्टि और उसके प्राणियों के लिए चलते रहने वाली देखभाल है। हम न केवल यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने इस संसार की रचना की और फिर समाप्त करके कुछ और करने के लिए चल निकला। नहीं, परमेश्वर निरन्तर इस संसार को अपने वचन की सामर्थ्य के द्वारा थामे रखता है। अपने वचन के द्वारा, अपने आत्मा के द्वारा, परमेश्वर निरन्तर इस संसार को थामे रखता है। इसलिए हम परमेश्वर के द्वारा किए जा रहे प्रबन्ध के बारे सोचते हैं जिसकी हमें आवश्यकता होती है: जैसे भोजन, पानी, हवा, और वह सभी बातें जिन्हें हम यों ही लेते हैं, परमेश्वर उनकी प्रबन्ध कर रहा है। इसलिए ही परमेश्वर को हमारा धन्यवाद दिया जाना अति महत्वपूर्ण है। हम भोजन के लिए धन्यवाद देते हैं और उसे स्तुति और धन्यवाद की भेंट चढ़ाते हैं। प्रत्येक भला वरदान हम ऊपर पिता से पाते हैं। इसलिए, हम स्मरण रखने की आवश्यकता है कि वह हमें सब कुछ देता है जिसकी हमें आवश्यकता होती है। वह शासक है। वह वास्तव में सभी घटनाओं को देख रहा है, यहाँ तक कि ऐतिहासिक घटनाएँ कई बार उसके नियंत्रण के बिना उजड़ी हुई लगती हैं, परंतु परमेश्वर इन सब बातों के ऊपर सर्वसामर्थी है, उन्हें मार्गदर्शन देता, उन्हें होना देता है ताकि हम इनके द्वारा अचम्भित रह जाए, परंतु हम यह विश्वास करें कि परमेश्वर का अभी भी इन पर अधिकार है वह अपने ही प्रयोजन की प्राप्ति के लिए इनका मार्गदर्शन कर रहा है। परंतु इसी के साथ, विशेष कर हमारे लिए प्रत्येक प्रबन्ध को करने के साथ और हमारे उद्धार के लिए, हमें उसके पुनर्स्थापना के अनुग्रह से भरे हुए कार्य, हमारे पुनर्निमाण के कार्य और यह कि वह एक दिन हमें नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में ले जाएगा यदि हम हमारे विश्वास को उसमें बनाए रखते हैं... तो हम उसका अनुसरण नए राज्य में करेंगे, की आवश्यकता का अहसास करने के लिए इन्हें करता है। वहाँ हम क्या देखेंगे कि वहाँ पर परमेश्वर के विधानात्मक देखभाल की पूर्णता है जब वह इसे करता है, हमारे महान् स्वर्गीय पिता होने के नाते वह हमें इतना ज्यादा प्रेम करता है, हम हमारे लिए प्रत्येक उत्तम वरदान का प्रबन्ध करता

है जिसकी हमें स्वयं को थामे रखने के लिए उस कार्य में आवश्कता है जिसे उसने हमें करने के लिए दिया है।

रेव्ह. डॉ. जस्टीन टैरी

उपसंहार

इस अध्याय में, हमने परमेश्वर के धर्मशिक्षा या परमेश्वर विज्ञान के हमारे अध्ययन को, इस बात के ऊपर ध्यान केन्द्रित करते हुए परिचित किया है कि हम कैसे उसमें विश्वास कर सकते हैं जिसे हम परमेश्वर के बारे में जानते हैं। हमने देखा कि परमेश्वर के बारे में हमारा ज्ञान दोनों अर्थात् द्विव्य प्रकाशनों और रहस्यों के द्वारा आकार लेता है, जिसमें सामान्य और विशेष प्रकाशन और स्थाई और अस्थाई रहस्य सम्मिलित हैं। और हमने सीखा कि परमेश्वर के बारे में हमारे ज्ञान में उसके गुणों और उसके कार्यों दोनों अर्थात् उसकी अकथनीय और कथनीय गुण और सृष्टि और विधान के उसके कार्य के प्रति जागरूकता अवश्य पाई जाती है।

मसीह के अनुयायियों को परमेश्वर के साथ अपने व्यक्तिगत संबंध और संसार में उसके कार्यों के अपने अनुभवों में विकास करने की लालसा होनी चाहिए। परंतु ऐसा करने के लिए, हमें स्वयं को जितना अधिक हो सके परमेश्वर के बारे में सीखने के लिए समर्पित करना चाहिए। इस अध्याय में, हमने कुछ ऐसे मुख्य विषयों को स्पर्श किया है जो कि परमेश्वर विज्ञान में अग्रभूमि में आते हैं। परंतु जैसा कि हम आगे आने वाले अध्यायों में आगे बढ़ते हैं, हम और अधिक से अधिक परमेश्वर के धर्मशिक्षा के बारे में खोज करते चले जाएँगे कि परमेश्वर कौन है और वह क्या करता है। और जैसा कि हम इसे करते हैं, हम मार्ग में आने वाले प्रत्येक चरण को देखेंगे, कि कैसे मसीही धर्मविज्ञान के प्रत्येक आयाम में परमेश्वर के लिए हमारा वृद्धि होता हुआ ज्ञान और परमेश्वर के लिए विश्वासयोग्य सेवकाई के प्रत्येक आयाम अति आवश्यक हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।